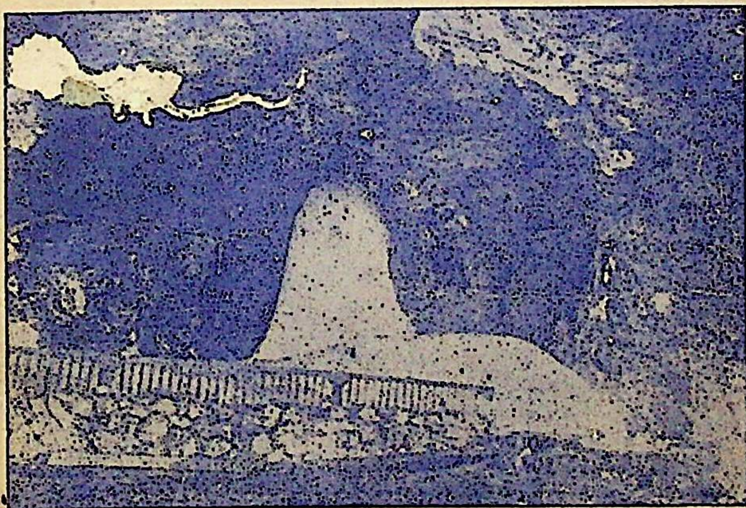
# पारिजात मञ्जरी

सत्यं शिवं सुन्दरम्

मनसैवेदमाप्तव्यम्.........



**स्वामी अमरनाथ जी**

तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु

रविकुलजः राधाकान्त सुदर्शनात्मजः।

# पारिजात मञ्जरी

लेखक :

रविकुलज : जगन्नाथः शास्त्री
भट्टयार आली कदल
श्रीनगर (२)
काश्मीर






प्रकाशक :—
अवतार कृष्णः रिवूः
एम. ए. संस्कृत
एम. ए. हिन्दी
बी. एड.
भट्टयार आली कदल
श्रीनगर (२)
काश्मीर



# पारिजात मञ्जरी

सत्यं शिवं




मनसैवेदमाप्तव्यम् ...........

स्वामी अमरनाथ जी

तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु

रविकुलजः राधाकान्त सुदर्शनात्मजः

जगन्नाथः शास्त्री

प्रथमावरण : १९७२–१९७३
एक हजार प्रति

मूल्यम् : ५–००

प्रकाशक :— अवतारकृष्ण रिवूः
एम. ए. संस्कृत
एम. ए. हिन्दी
बी. एड.
मट्टयार आली कदल
श्रीनगर (२) काश्मीर

मुद्रक : नरेश आर्ट प्रैस, जम्मू

( अस्य पुस्तकस्य प्रकाशनार्थं
जम्मू काश्मीर साहित्याकादेमीत
आर्थिकानुदानेनानुगृहीतोऽस्ति लेखक : )







स्वर्गीय पिता श्री सुदर्शन देव तथा स्वर्गीया माता श्रीमती राधादेवी के पुण्य स्मृति में उनके श्री चरणों को यह मेरी श्रद्धाञ्जलि इस पवित्र शिवरात्रि पर्व पर समर्पित हो।

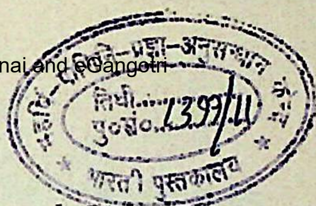
Dr. B. N Pandit, Shastri,
M. A., M O. L. Ph. D.,
Specialist in Kashmiri Shaivism

Dated 15-8-1971

The Review of the Parijata Manjari and Shiv Nirvanam by Shri Jagan Nath Rivoo Shastri of Srinagar.

The work consists of the Sanskrit translation of some Kashmiri poems by Parmananda. The first verse translation of Kashmiri poetry was made by Bhaskarakantha during the Afgan rule in Kashmir. His translation of some Kashmiri poems of Lalleshwari into Sanskrit verse was published by the Research Department of the State Government.

New life has been put into that literary activity of Bhaskara-Kantha by the efforts of Shri Jagannatha Shastri. He has translated into Sanskrit verse some very important Kashmiri poems of Parmananda. This effort on his part is highly appreciable.



Parmananda Jewancharitam and Padyatra are accounts of the life of Parmananda and pilgrimage to Amarnath Cave written in lucid Sanskrit prose. These are original Sanskrit articles.

The language of the whole compilation is simple and clear. It is not orthodoxly written and can be appreciated by modern readers also. The metres are simple and flexible.

The compilation includes some original Sanskrit poems which are philosophic in character. These poems are very useful, interesting and beautiful.

The work, if published, would definitely add something new to the available Sanskrit literature. It could be used as a Class-library-book in Higher Secondary Schools and Colleges. On the whole, the work deserves all possible encouragement with regard to its publication.

Sd:-

Dr. B. N. Pandit, Shastri,
M. A., M. O. L.,
PH. D. In Kashmiri Saivism.

Srinagar,
Dated 15-8-1971.

# दो शब्द

उन दिनों की यह बात है जब मैं ६ साल का छोटा बालक था। मेरी चचेरी दादी गुज़र चुकी थी। उसके मृतक दिनों में मेरे कुल गुरु कथा वाचन कर रहे थे। परा पूजा के 'पुष्पाणि सन्तु तव देव मदिन्द्रयाणि' पद्यों की व्याख्या गुरु जी कर रहे थे। मैं इस परा पूजा की व्याख्या सुन कर आत्मलीन हो गया।

फिर समय बहुत गुजर चुका! दस ग्यारह वर्ष की आयु में मेरा विवाह बचपन में ही हुआ था। अमरनाथ जाने की लालसा मेरे मन में जाग चुकी थी। मेरा चचेरा भाई कुछ मित्रों के साथ अमरनाथ यात्रा के लिए रवाना हो गया। मैं भी जाने का उत्सुक था परन्तु छोटा बच्चा जान कर उसने मुझ को साथ न लिया। कई वर्षों के उपरान्त मैं भी अपनी मित्र मण्डली से मिल कर अमर नाथ यात्रा के लिए रवाना हुआ। दर्शन करके वापिस लौटा, अमरनाथ क्या है कहां है कैसा है शिव क्या है, कहां है, कैसा है। ऐसे विचार मेरे मन में जागने लगे। सत्संग करता रहा।

मेरा एक मित्र स्व० हरी चन्द यह नाम का एक नक्शा नवीस था। वह मुझ से संस्कृत की कुछ संध्या आदि पाठय पुस्तकें पढ़ता था। वह बड़ा आस्तिक और श्रद्धालु था। वह कभी २ परमानन्द की "मन थिर कर पूजन प्रभो" अमरनाथ की कश्मीरी लीला पढ़ता था। और मुझे सुनाता था। धीरे २ इस गीत ने मेरे मन में ज्ञान प्रकाश डाला। कई वर्षों के बाद मुझे स्व० मास्टर पं० जिन्द कौल की लघु पुस्तिका हाथ में लगी। इस को

समझने का प्रयत्न किया। जिस का परिणाम आप के सामने उपस्थित करता हूं। मैं कोई ज्ञानी मानी बुद्धिमान् पण्डित नहीं हूं। केवल मुझे भक्त जनों का ही सहारा था। ठीक ही किसी कवि ने कहा कि नदी सूखने पर उस के स्थान पर यदि कुआं खोदा जाये, तो भी वहां से मीठा ही पानी बहता है।

उस समुद्र के खारा पानी से क्या प्रयोजन है जहां आदमी जा कर प्यासा ही रह जाता है।

ऐसा ही हाल आज कल के धनी मानी और धर्म का ढोंग रचाने वाले भव्य पुरुषों का है। जो भोले-भाले आदमियों को अपने पीछे भटका कर तथा उनसे अपना उल्लू साध कर उनको भूल भुलैयों में फंसा कर संसार में ढोंग मचाते हैं। ऐसे सज्जनों को मेरा शतशः प्रणाम हो।

प्रेम नगर, न्यूप्लाट जम्मू
३१-१-७३

# प्राक्कथनम्

भारतेवर्षे संस्कृतभाषा वाङ्मयमतीव समृद्धमस्ति। तत एव प्राकृतनायां तत्तद्देशभाषाभक्तैः सुजनैः संस्कृतवाङ्मयवाटिका-पुष्पभूतानां केषाञ्चित् काव्य शास्त्राणां स्वस्वदेशभाषायामनुवाद-स्तत्र कृतः। तैश्चानुवादैः सा सा देशभाषा समृद्धिं प्राप्ता।

सन्ति देशभाषास्वपि तथाविधानि रहस्यवादादिभरितानि काव्यानि यथाविधानि संस्कृतवाङ्मये नेदानीं लभ्यन्ते।

ततो वर्तमाने युगे देशभाषावाङ्मयस्य संस्कृत भाषायामनु-वादकरणंप्रति विदुषां प्रवृत्तिर्जाता।

महाराष्ट्रभाषाकाव्यानां संस्कृतानुवादः प्रायः संस्कृतपत्रि-कासु प्रकाश्यन्ते। स्वतन्त्रग्रन्थरूपतयापि केषांचित् तेषां काव्यानां मुद्रणं प्रकाशनं च सम्पन्नम्।

प्रस्तुते च ग्रन्थे श्रीमद्भिर्जगन्नाथरिवू शास्त्रिभिः काश्मीर भाषावाङ्मयस्य कासांचिन्सुन्दराणां रचनानामनुवादं विद्धद्भिः संस्कृतभाषायां च वर्तमाने युगे प्रसिद्धान् भावाननुसृत्य नूतना काव्यरचनाश्च कुर्वद्भिर्महतीमहिमामयी सेवा क्रियते संस्कृतवाचः यत्नोऽयमेतेषां शास्त्रि महोदयानां सफलः स्यादित्याशास्महे वयम्।

लोकाश्चापि यत्नमेतेषां प्रशंसन्त्वभिनन्दन्तु चेति प्रार्थयामः तदित्थमभिनवैः प्रकारैः संस्कृतवाग्देवतायाः पूजां कुर्वन्तः श्री जगन्नाथशास्त्रिणः सत्यं सुधन्याः।

श्रीनगरी
२१–७–१९७१

डा० बलजिन्नाथ पण्डितः
शास्त्री एम. ए. एम. ओ. एल.
पी. एच. डी.

# विषय सूची

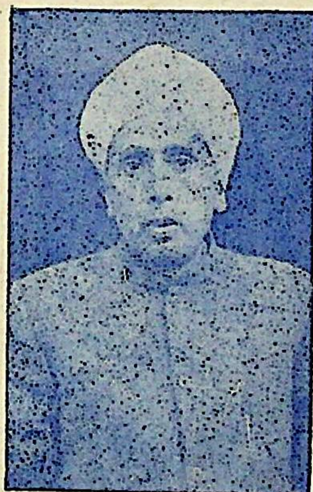


## चित्र सूची :—



मैं उन सज्जनों का आभारी हूँ जिन्होंने मुझे इस पुस्तक को छापने में मार्ग दर्शन कराया।

विशेषकर :—डा० बलजिन्नाथ पण्डितः
शास्त्री एम. ए. एम. ओ. एल., पी. एच. डी.



लेखक परिचय :

नाम — जगन्नाथ

जाति — रिवू

शिक्षा — शास्त्री

जन्म १९१७ ई०

व्यवसाय अध्यापन डी. ए. वी

हायर सिकण्डरी स्कूल रैणावारी

स्थायी पता, बटयार, आली कदल

श्रीनगर-२ (काश्मीर)



# परिजातः कुत्र

१. संपूर्णसस्या भरिताफलैश्च
योमामहेशस्य विहारभूमिः
कश्मीर नाम्ना प्रथिता धरायां
साराजते नन्दनवाटिकेव ॥१॥

२. या पर्वतैर्वन्य लताद्रुमैश्च
वनस्थलीभिश्च महौषधैश्च
सरित्तडागैर्जलजैः सरोभिः
समावृताभूधरराजकुक्षौ ॥२॥

३. अत्र स्थिता शैल सुतातपस्यां
चकार भर्तुः पुनराप्तये सा
पवित्र भूमिर्मुनिकश्यपस्य
तीर्थीकृता सिद्धमहर्षिभिर्या ॥३॥

४. यत्रामराणां वहते नदी सा
यामाहुः सिद्धा अमरावतीति
नाथोऽमराणां निबसन् गुहायां
मनः स्थितिं साधयतीह ध्याने ॥४॥

५. यो ज्ञान गम्यः श्रुतिभिर्विमृग्यः
कूटस्थ आद्यः पुरुषो हृदिस्थः
अजः शिवः पुण्यजनैर्नमस्यः
सोऽत्र स्थितः पर्वत कन्दरायाम् ॥५॥

६. सर्वेषुचित्तमधुपो विषयद्रुमेषु
बभ्राम यः सततमस्तमयाभिलाषः
दैवादवाप्य परमेश्वरपारिजातं

तृप्तो विलीन इव मुञ्चति चञ्चलत्वम् ।। ११।।

७. सफल: शीतलच्छाय:
पारिजातो गुहास्थित:
सेव्यतेऽहर्निशं सद्भि:
शुक्लकृष्णैरिवोडुराट् ।।६।।

८. नमस्ते पारिजाताय
चिच्चकोरखगालय
चित्सुधाम्बुधिसंभूत
कलानिधिशिरोधर ।।७।।

९. द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया
समानं वृक्षं परिषस्वजाते
तयोरन्य: पिपलं स्वाद्वत्त्य
रनश्ननन्योऽभिचाकशीति ।।८।। इति ।।

१०. मनसैवेदमाप्तव्यं नेह नानास्ति किंचन
मृत्यो: स मृत्यु गच्छति य इह नानेवपश्यति
कठोयनिषद् अध्याय (२) मन्त्र (११)

१२. त्वामगाधमविकल्पमहयं
स्वस्वरूपमखिलार्थं घस्मरम्
आविशन्नहमुमेश सर्वदा
पूजयेयमभिसंस्तुवीय च ।।२।।
आचार्य उत्पलदेवस्य

१३. हिमगिरितनया हिमांशुलेखा:
सरिदतिशीतजला सुराणाम्
इतित्रिभिरतिवेपितोऽसि शंभो

प्रविश मम हृदये त्रितापतप्ते ॥३॥
अन्यस्य

१४. स सन्ददाति मेऽमरवर्यं पूजितः
प्रयच्छताद्भूधरराजकुक्षिगः
वृषध्वजोदेवगणैः समावृतः
सुदर्शनः चन्द्रकलाधरोह्यजः

१५. सन्ध्या समागममहो ममजीवितस्य
ज्ञात्वा च मां जिगमिषां तवसन्निधाने
प्रक्ष्याल्य धूलिमलिनंतनयं स्वकीयं
क्रोडे नयाशु जगदीश कृपानिधान

१६. राधा कान्तसुदर्शनात्मजजगन्नाथेन संस्मारितो
नाना पुष्पफलाढ्यगन्धभरितः सत्पारिजातो महान्
सोऽयं भारतवासिभिः सुमहता पुण्येन प्राप्तो भुवि
राधादर्शन लालसां प्रकुरुते सा सत्यभामोपमा ॥

—

## अमरनाथस्य प्रथमः यात्री

वृषासनो वागमखेत्रगोहरो
गोपालबालो द्विजधर्मपालकः
नौका विहारं स चकार पूजितः
सुदर्शनेनैव सरोवरेऽमरे ॥

सुना है कि जब कश्मीर देश में पठानों का शासन समाप्त होने वाला था। कश्मीर के लोग उन दिनों चोरी छिपे अपना निर्वाह कष्ट से करते थे। इसी कश्मीर देश में वागम नामक किसी गाऊँ में एक सुदर्शन नाम का दुकानदार रहता था। जो कि भगवान का बड़ा भक्त था। वहां पर ही किसी खेत में भोले वाले गोजर बालकों की एक टोली खेलने के लिए प्रतिदिन आती थी। खेल के अन्त पर वह दुकानदार उन बालकों को बड़े प्रेम से मिठाई खिलाता था। एक दिन बालकों ने दुकानदार से कहा कि एक छोटा नन्हा-मुन्हा सुन्दर बालक एक बैल पर सवार होकर प्रति दिन हमारे साथ खेलने के लिए आता है। तू उस को मिठाई क्यों नहीं खिलाता है। यह सुन कर दुकानदार आश्चर्य चकित होकर उस बालक के बारे में पूछ ताछ करने लगा। बालकों ने दुकानदार को खेल के आरम्भ में आने के लिए मशवरा दिया। दूसरे दिन दुकानदार खेल शुरु होने पर आया बालकों ने उस वृषासन पर बैठे हुए बालक को दिखाया। परन्तु दुकानदार न देख सका। फिर बालकों ने बैल का दुम दुकानदार के हाथ में दिया। बैल सवार ने दुकानदार को घसीट कर दूर ले लिया। परन्तु दुकान दार ने बैल का दुम हाथ से न छोड़ा।

अन्त में दुकानदार को शंकर का दर्शन वहीं मिला। और शंकर जी ने पुनः दर्शन देने के लिए दुकानदार को अमरनाथ जी की गुहा में आने के लिए कहा। उसी वर्ष वही यात्री अमरनाथ जी कि गुहा में शंकर जी का दर्शन करने के लिए गया था। जो की आज तक प्रचलित है। किसी भक्त कवि ने इसी के विषय पर एक गीत काश्मीरी भाषा में गाया है—

"भूल वाल वालकल सूत्य खेलनावतम,
सुदिवानिन्य पठय हावतम रूप।"

इसी दुकानदार ने शिवरात्रि के दिन शेषनाग के सरोवर में शंकर जी के साथ नौका विहार करके शिव जी की सायुज्य मुक्ति प्राप्त की थी।

प्रेम नगर निवप्लाट जम्मू में



# अमरनाथस्य पदयात्रा

१. इह खलु संसारसागरेऽपारे करुणानिधिः पर प्रकाश-स्वरूपः सर्वान्तर्यामी चराचरात्मा नारायणादिभिः सहस्रनाम-भिरभिधेयः सर्वत्र सर्वदा व्याप्त इत्यस्मदीयानामृषिमुनिप्रभृती-नां पूर्वजानां मतमासीत्। यद्यपि तस्य निवासः पदे-पदे वर्तते तथापि तंस्तच्चरित्रानुसारेण तस्य कतिपयानि तीर्थस्थानानि जनानां प्रशस्तमार्गदर्शनाय निश्चितानि सन्ति।

२. इह कर्मभूमी भारतवर्षे यानि प्रवरतीर्थ-स्थानानि सन्ति तानि सर्वाणि मिलित्वाऽस्मिन् काश्मीरमण्डले सन्ति इति काश्मीरहिन्दुसमाजस्य निश्चयः तथा भारतीयहिन्दुसमाजस्यापि विश्वासः।

३. तथा चोक्तं कुत्रचित—

भारते यानि तीर्थानि
तानि काश्मीरमण्डले।
कश्मीरे यानि तीर्थानि
तानि वैतस्तिके जले॥

४. कश्यपशुनिर्मिमितो देवानां निवासभूत एष कश्मीरदेशो भूस्वर्ग इति नाम्ना जगत्यां प्रथितः। यथा दक्षिणभारते स्वामिनः श्रीजगन्नाथ-तीर्थप्रवरस्य यथा चोत्तरभारते श्रीभद्रीनाथतीर्थ-प्रवरस्य महिमा वर्तते, यथा तयोस्तीर्थयात्रार्थमाबालवृद्धा नरनार्यः शतशोऽथसहस्रशोऽहमहमिकया संघशो यान्ति, तथैव भारतीयाः विशेषतोऽत्रत्या काश्मीरिकाश्च हिन्दवः श्रीअमरनाथ-दर्शनार्थमा-बालवृद्धा नरनार्यः शतशोऽथसहस्रशोऽहमहमिकया प्रतिश्रावणपूर्णिमायां सङ्घशः प्रयान्ति।

५. यद्यपि हिमाच्छादितपर्वतशृङ्खलाभिरावृतोऽयं दुर्गमः प्रदेशः, तथापि भक्तप्रवरः साधवः सन्यासिनो दुर्गममार्गस्याशङ्का-मपहाय शरीरकष्टं सोढ्वा बालवृद्धा नरनार्यश्च सङ्घशस्तीर्थ-यात्राफलप्राप्तये प्रतिश्रावणपूर्णिमायां नियमपूर्वकं श्रद्धाभक्ति विनम्रचेतस आयान्ति।

अस्य पुण्यतीर्थराजस्यदर्शनाय प्रतिवर्षं दर्शनं कृत्वापिपुनरपि दर्शनाय लालायन्ते। दर्शनं कृत्वा च स्वात्मानं कृतार्थं मन्यन्ते।

६. अस्मिन् गुहामन्दिरे स्थितस्य स्वयंभूहिममयलिङ्गस्य विशिष्टं महात्म्य दरीदृश्यते। लिङ्गमिदं चन्द्रमसो ह्रासविका-साभ्यां सहैव हीयते वर्धते च। इदं स्वयंभूहिममयलिङ्गं प्रति-पूर्णिमायां स्वपूर्णाकारेण दृष्टिपथमायाति। प्रत्यमावस्यां शून्या-कारेण दृष्टिगोचरं भवति। नात्र काप्यत्युक्ति र्नाप्यतिशयोक्तिर्वा। बहुभिर्महात्मभिस्तत्र गत्वा मासमेकं स्थित्वा चास्य स्वयंभूहिममयलिङ्गस्य चमत्कृतिर्दृष्टा। अत्र विषये विशेषतः काश्मीरनिवासिनः पूज्यपादशैवमतानुसारिणः श्रीस्वामिनो विद्याधरस्य नाम उल्लेखनीयतमम्।

७. प्रतिवर्षमाषाढश्रावणपूर्णिमापर्वयोरेवेष मार्गः सुगमः नान्येषु दिवसेषु । आषाढश्रावणपूर्णिमादिनयोः सहस्रशो यात्रिणाऽस्य स्वयंभूसदाशिवलिङ्गस्य दर्शनं पूजा च विधाय स्वात्मानं कृतार्थं मन्यन्ते । काश्मीरिककल्हणविरचित प्राचीनतम 'राजतङ्गिणी' तथा 'नीलमतपुराणादि' प्रामाणिक ग्रन्थानां मध्येऽस्य हिममयसदाशिवलिङ्गस्य महिमा वर्णितोऽस्ति ।

८. देशविदेशनिवासिभिर्योगिप्रवरैर्भागवतोत्तमै--र्महात्मभिश्चास्याश्चर्योत्पादकस्य स्वयंभूहिममय-सदाशिवलिङ्गस्य दर्शनं कृतमस्ति । स्वामितः श्रीशंकराचार्यवरस्य तथा श्रीविवेकानन्दस्य च नाम अत्र विषये विशेषरूपेणोल्लेख-नीयम् ।

९. श्रूयते च यदत्रामरनाथगुहास्थाने श्रीशिवः स्वप्रियतमायै पर्वतराजपुत्र्यै श्रीपार्वत्यै स्वाभीष्ट-तमाममरकथां श्रावयामास । श्री अमरनाथस्य सुप्रसिद्धैषा गुहा समुद्रतलादेकोनत्रिंशदधिक सप्तशतोत्तरद्वादशसहस्रपदोन्नततमे भागे (१२७२९ फुट) हिमालय स्योपत्यकायां हिमाच्छादितपर्वतश्रृंखलामध्यगता श्रीनगरप्रदेशात्पञ्चनवतितमे मीलके (९५ मील) स्थाने वर्तते ।

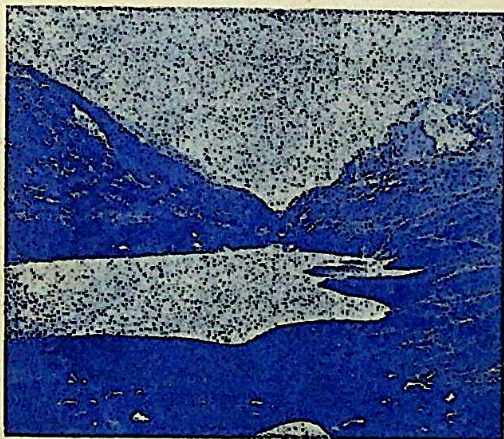
## प्राकृतिकी सुषमा

१०. अस्यै अमरनाथयात्रायै यात्रिणः सुन्दरतमानां पर्वतीयानाँ दृश्यानामानन्दमनुभवन्तः पर्वतमार्गेणैव गच्छन्ति । सर्वस्मिन्संसारे मार्गोऽयं विशिष्टं स्थानं लभते । अत्र प्राकृतिकी सुषमा यात्रिणां कृते हृदय-स्यानुपमां शान्ति विदधाति ।

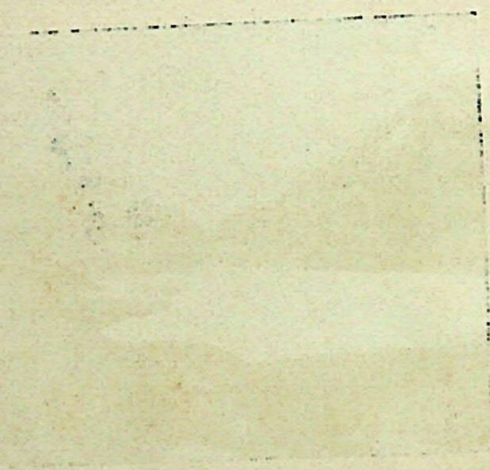
श्री अमरनाथदर्शनार्थं गच्छन्तो यात्रिणः श्रीनगरतो मटोर-वाहनेनैव प्रायशः पहलग्रामपर्यन्तं षष्टिमीलमात्रं गच्छन्ति तदनु पञ्चत्रिंशन्मील मात्रं पदयात्रयाश्ववाहनेन वा यात्रिणो यात्रां कुर्वन्ति। पहलग्रामनिवेशात् अधिको दुर्गमो हिमाच्छादितश्च पर्वतीयो मार्गोऽस्ति।

१२. पुरा हि प्रथानुसारेणः श्रीनगरस्थ-गणपतिविहारे वितस्तानद्यां स्नात्वा ऋद्धिसिद्धिप्रदां शुभलक्षणां श्री गणेशमूर्ति श्रावणशुक्लचतुर्थीदिनेऽर्चयित्वामरनाथयात्रार्थं प्रयान्ति स्म। पञ्चमीदिनेऽमीराकदलःथ वडशाहसेतुसमीपे श्रीभैरवमन्दिरे श्रीभैरवपूजा विधाय शक्तिरूपां दुर्गां च पूजयित्वा दुर्गानागनिवेशे रात्रौ विश्रामं कुर्वन्ति स्म ततः षष्ठयाँ प्रभाते दुर्गामर्चयित्वा शिवपुराख्ये तीर्थे नद्यांस्नात्वा कुण्डलाकारःिथतां वितस्ता नदीं पूजयन्ति स्म। तदनु सप्तमीदिने पंपुग्रामे रात्रौ विश्रामं कुर्वन्ति स्म। अष्टमीदिने विजयेरविहारे श्रीकृष्णचन्द्रस्य दर्शनं कृत्वा सर्वपापविमुक्तं स्वात्मानं मन्यन्ते स्म विजयेश्वर विहाराख्यो निवेशः श्रीनगरादष्टाविंशतितमे मीलके तिष्ठति। ततो यात्रिणः श्रीशिवजटाविराजितं थज्यवारग्रामे तीर्थयात्रा कृत्वा तत्र शिवं च पूजयित्वा छुण्डबलनामके ग्रामे देवपूजां कुर्वन्ति स्म ततो यात्रिणोऽनन्तनागतीर्थप्रवरमतिक्रम्य मार्तण्डतीर्थप्रवरे पर्वतशिखरे ःिथतां भर्गशिखाख्यां श्री दुर्गां दीपधूपवलिपुष्पादिभिः समाहितमनसा यात्रासाफल्यार्थं समर्चयन्ति स्म।

१३. तदनु मामलेश्वरविहारस्थं पावनं सदाशिवं परिक्रम्य यात्रासिद्धयर्थं स्वात्मानं शिवपत्सु समर्पयन्तिस्म श्रावणैकादश्यां यात्रिणः पहलग्रामनिवेश एकत्रिता भवन्ति द्वादश्यां सूर्योदयात्प्रक्



श्री अमरनाथ यात्रा मार्ग में आने वाला श्री शेषनाम जी का पवित्र सरोवर स्थान



पहलग्रामनिवेशान्निर्गत्य चन्दनवाडनिवेशमायाति। पहलग्राम-चन्दनवाडनिवेशयोरन्तरं केवलं मीलकाष्टकमात्रं भवति। चन्दन-वाडनिवेशस्तु सुन्दरतमै दृश्यैः परिपूरितोऽस्ति। यो हि समुद्रतला-त्पञ्चशताधिकनवसहस्रपदोन्नततमे (९५०० फुट) पर्वतीयमार्गे स्थितो भवति।

१४. चन्दनवाडनिवेशात् द्वितीयो निवेशः शेषनागस्य, यो हि चन्दनवाडनिवेशान्मीलकषट् के (६ मील) स्थाने वर्तते। यत्र रमणीयतमानि मनोहराणि बहुविधानि दृश्यानि सन्ति। एतत्स्थानं-पिस्तूशैलमार्गेण गम्यते। यत्र तरुलताभिराच्छादिना विकसितपुष्पाः सरसाः सुरम्याश्च, वनभूमयः सन्ति। तदनुजूज्यपलनाम्नी भूमिर्दृ-ष्टिपथमायाति। अत्र रात्रौ यात्रिणः विश्रामं कुर्वन्ति। तदग्रे मीलकत्रिकमुल्लङ्घ्यशेषनागस्य निवेशः समागच्छति। यो हि समुद्रतटात् त्रिंशादुत्तरैकशतद्वादशसहस्र-(१२१३० फुट) पदो-न्नततमे स्थाने तिष्ठति। अत्रैकं सुप्रसिद्धं शेषनागाभिधेयं महत्स-रोवरमस्ति। यस्य जलं शीतलतमं मधुरं सुस्वादिष्टं क्षीरसमं श्वेतं च साक्षात् क्षीरसागरोपमं दरीदृश्यते। अस्य सरसो जल-विन्दुपानेन सर्वमध्वपरिश्रममपगच्छति। अस्मिन् हिममयशीतल-जले यात्रिणः कथंचित्स्नात्वा स्वात्मनं कृतार्थं मन्यन्ते।

१५. आनीलगंगा संस्थानाद्वावजनपर्यन्तं पवनो दिवारात्र-मनर्गलमत्र प्रवहति। शेषनागनिवेशस्थे महासरोवरे नानारूपधरः शेषशायी पद्मनाभः उत्तमः पुरुषः श्रीनारायणः निवासं करोति। यो हि रागमुक्तैर्विवेकिभिर्दिवारात्रं समाराध्यो भवति।

१६. अत्रैव किञ्चिद्दूरे वावजनाभिधानं स्थानं भवति। यच्च समुद्रतटाद् त्रिंशदधिकैकशतोत्तर-द्वादशसहस्रपरिमितपदोन्न-

ततमे (१२१३० फुट) स्थाने भवति। यच्चातीवाह्लादकरं रमणीयतमं स्थानमस्ति। अत्रेन्धनस्याभावः किञ्चिन्मात्रमस्ति।

१७. शनैः २ पञ्चालाख्यं महानगं समारुह्य भैरवपर्वतं चातिक्रम्य पञ्चतरणी नामके निवेशे यात्रिणः समागच्छन्ति। यो हि शेषनागनिवेशा-न्मीलकाष्टकमात्रे दूरे स्थितो वर्तते। स निवेशो महागुणसनाम्ना महता पर्वतीयदुर्गममार्गेण गम्यते। महागुणसस्थानं समुद्रतटाच्चतुर्दशसहस्र (१४००० फूट) पदोन्नतं भवति। अत्र नदीनां पञ्चधारास्तरणीयाः भवन्ति। इदमेव स्थानं पञ्चतरणी नाम्नाभिधीयते। इदं स्थानं भैरवपर्वतस्योपत्य-कायां भवति। अत्र यात्रिण एकां रात्रिं यापयन्ति। पूर्णिमा तिथौ सूर्योदयात्प्राक् प्रभातवेलायां पवित्रतमायां पञ्चतरणीनद्यां स्नात्वा यात्रिणो गर्भयात्रापारं च कृत्वा यात्रार्थं निर्गच्छन्ति। ततोऽमृतमय्याममरावत्यां नद्यां स्नात्वा पाषाणमयीं विभूतिं स्वशरीरेऽनुलिप्य भूर्जपत्राणि धृत्वा गुहाद्वारप्रदेशं समागच्छन्ति स्म।

१८. पञ्चतरणीनिवेशाद्गुहाद्वारपर्यन्तं मीलकचतुष्टयमात्रं (४ मील) भवति। एवं मार्गः सङ्गमपर्यन्तं दुर्गम एव प्रतिभाति। सङ्गमेऽमरावतीप्रवाहः पञ्चतरणीनदीप्रवाहेन सह सङ्गच्छते। सङ्गमप्रदेशाद्गुहापर्यन्तो मार्गोऽतीवसरलः। अत्र जलप्रवाहस्ती-व्रगत्या प्रवहति। यच्च हिमाच्छादितपर्वतशृंखलाभ्यो निर्गच्छति। अस्मात्सङ्गमस्थानाद्गुहामन्दिरपर्यन्तं मीलकद्वयं (२ मील) वर्तते। सङ्गमप्रदेशादारभ्य यात्रिणो "मन्त्रात्मकं शिवं शम्भुं महामृत्युंजयं जय" "नमो यस्मै कस्मैचन भवतु देवाय महसे" "शिवशंकर भवभय हर हर हर भवसरस्तारयमाम्" "प्राप्तो

मया तस्य शिवस्य दर्शनम्" महिम्नस्तोत्रादीनि मनोहराणि सस्वरं गायन्तः श्रद्धाभक्तिसमन्विता आनन्दभरितमानसा अत्युच्चस्वरेण निर्भयं जयघोषं कुर्वन्तो गुहामन्दिरे ईशाणकोणे स्थितस्य स्वयंभूहिममयसदाशिवलिङ्गस्य दर्शनं पूजां स्तुतिपाठादिकं समाप्योपहारं च समर्प्य तदनूर्ध्वमुखानि प्रसार्य गुहामध्ये गुहाशीर्षात् निपतन्तोऽमृतविन्दून् पिबन्ति । अमृतत्वं च भजन्ते । अत्रैव शक्तिरूपा सती श्रीशिवेन सह मोदते ।

१९. यत्र शुद्धोबुद्धोऽष्टसिद्धिपतिर्नवनिधिस्वामी वृद्धिक्षयविवर्जितः शाश्वतः सदाशिवलिङ्ग ईशाणकोणे स्थितो भवति । अत्र यात्रिणः आश्चर्यचकिता नग्ना उन्मत्ता इव ईश्वरदर्शनं कुर्वन्ति । गुहामध्ये शिवसन्निधौ "आशां त्वदीयां मनसि प्रधार्य समागतोऽहं तव द्वारदेशम्" हे आशुतोष वृषवाहनशूलपाणे" "महिम्नापारं ते" इत्यादीनि स्तोत्र-पाठादीनि पठित्वानन्दभरितमानसा गुहाद्वारांत्प्रत्यागच्छन्ति ।

२०. अस्मिन्निर्जनपर्वतीयप्रदेशे "यत्र जीवजन्तूनामत्यन्ताभावोऽस्ति" अनेकानि उड्डीयमानानि कपोतयुगलानि गुहाद्वारस्योपरिभागतो निर्गच्छन्ति । इत्येवंविधमाश्चर्यकारकं दृश्यं दृष्ट्वा यात्रिण आश्चर्यचकितास्तिष्ठन्ति । अत्र गुहाप्रविष्टस्य मानवस्य सांसारिकी कापि व्यथा न बाधते न कापि चिन्ता तापयति । न कस्यापि भयं प्रतिभाति । न केनापि सह रागद्वेषावुपजायते । अत्र सर्वं विश्व शिवमयमेवावभासते । लोकोत्तरमानन्दमनुभवन्तो यात्रिणो नवदलाभिधानं तीर्थस्थानं भाद्रपदकृष्णचतुर्थ्यां गच्छन्ति । यत्स्थानं त्रालाख्ये ग्रामससीपे तिष्ठति । तत्र यात्रिणः पितृणाँ श्राद्धादिकं कृत्वा ब्रह्मणेभ्यो दानं दक्षिणां च

दत्त्वा पादत्राणं यष्ठिकां च विसर्ज्यं स्व स्व गृहाभिमुखं श्री सदाशिवं स्मरन्ती प्रत्यागच्छन्ति। इति शिवार्पणमस्तु।

चतुर्थी पारिजातस्य मञ्जरी देवमार्गगा।
जगन्नाथकृता सैषा परमानन्दप्राप्तये। १॥

—

## श्री परमानन्द वर्यस्य जीवनचरितम्

### श्री परमानन्दस्य जन्म १७६१–निधनम् १८८०

१. प्रकृति नटयां: क्रीडास्थल्यां मृषिमुनि कविवराणां तपोवनभूमावस्यां पवित्रतमायां श्री कश्यपमुनिनिर्मितायां श्रीकाश्मीर वाटिकायामनेकानेक साहित्यकार दार्शनिक कविप्रभृतीनां च समये समये प्रादुर्भावः समभवत्। यैस्तपस्विभिः स्व स्व समये तपस्यां पश्रिमं च कृत्वा वाङ्मयसरस्वती साहित्य कोशाभिवृद्धि संपाद्य सांसारिक साधारण जीवानां कृते मार्गप्रदर्शनं सपादितम्। यस्यानुसरणेन संसार तापतप्तस्य मानवस्य शोक मोहैरभितप्तं व्याप्तं च मनः स्वच्छशान्तवातावरणे प्रविश्यानन्दभरितं स जायते। नात्र काप्यत्युक्तिः प्रतिभाति।

२. तथाह्यस्यां परमपावनीयां काश्मीरवाटिकायामनेकानेक प्रकाण्डपण्डितैः प्रातः स्मरणीय भूतै राचार्यपदारूढैः काश्मीर गौरव भूतैः श्रीमद्भिर भिनवगुप्तकैंपट मम्मटोत्पलमंखकरत्नाकर शिवस्वामि कल्हन प्रभृतिभि यथा स्वप्रखर प्रतिभायाः परिचयः सुसंस्कृतभाषायां प्रदत्त आसीत्।



स्वर्गीय श्री १०८ परमानन्द जी
जन्म १७६१ ई०
निधन १८८० ई०

३- तथैवात्र श्री काश्मीरदेशे रहस्यवादि कविवरैः कवयि-त्रीभिश्च स्व स्व समये भावव्यञ्जनामयः काश्मीर भाषायामपि स्वप्रतिभापरिचयः स्वगीति काव्येषु प्रदत्तः, येषां भावः साधारणजनानांकृते ज्ञातुं दुरूहः।

४. एतेपूर्वोक्ता महात्मानस्तपस्विगणाः कविवराश्च स्व-साधारण जीवनं वेषभूषां चात्मसात्कृत्य श्रमिकगणा इव निरंहे-कारेण स्वसाधारणगृहस्थे कालयापनं विधाय सदात्मचिन्तने विलीना वभूवुः।

५. अन्यच्च काश्मीर भाषा साहित्येऽपि भक्ति काव्यस्य प्रचुरतरोपलब्धिरस्ति। काश्मोरभाषा काव्यारम्भ काले रहस्यपूर्ण भक्तिज्ञान काव्यस्य निर्मात्री प्रथमा कवयित्री लल्लेश्वरी सर्वोपरि वर्तते तदतिरिक्ताः कवयित्र्यः कवयश्च समये २ कश्मीर भाषायां सगुणनिर्गुण काव्य धारां वाहिनाः रूपा भवानी, मिर्जाकाक, प्रकाशभट्ट शेखनूरदीन, कृष्णराजदान गोविन्दज्यो रजगरो, शाहकलदर शसफकीर प्रभृतयश्च संबभूवुः।

६. तेष्वेव श्री परमानन्दः सप्तदशाधिकैकनवतितमे १७९१ खिस्ताब्दे ऽनन्तनागान्तर्गत (मटन तीर्थस्य) मार्तण्ड तीर्थस्य नातिदूरे सीरग्रामे समजनि। श्रीपरमानन्दः स्वयं श्रीमुखेनाभिहितवान्

सीरग्राम नन्दयार चार कर म्युन।
भियवुल सोन कृष्ण गन्दरो॥

अस्यार्थः—हे नट वर कृष्ण! त्वं पुनः सीरग्रामान्तरगतस्य नन्दरामाभिधस्य प्रियसंख्युः सुमुध्दाराय गृहं समागच्छ।

७. शैशवे परमानन्दो नन्दराम इति स्व मातृ पितृकृत नामधेय आसीत्। तदनुकाव्य संसारे परमानन्द इति ख्याति लेभे।

८. परमानन्दस्य पिता कृष्णपण्डितः माता च सरस्वती देवी अल्पवयसि मालदिदी इत्यख्याया कन्यया सह परमान्दस्य विवाहः संजातः। परमानन्दः मृदुः स्वंभावः मालदिदी उग्रस्वभावा बभूव।

९. श्रीपरमानन्दः मटनतीर्थस्य समीपे पर्वतस्योपरि संस्थिते भर्गशिखा मन्दिरे दुर्गोपासनां चकार। भर्गरूप नव दुर्गा च मान इत्यादि सोऽयं महामनः पटोपाध्याय (पठवारी) जीविकया स्वं निर्वाहयामास।

१० मिमरा रघूमलाभिधानः कोऽप्यधिकारिवर्गस्थः परमानन्दस्य स्कन्धे मेषाख्य पशुं विधाय श्रीनगरं प्रेषयामास। मार्गश्रान्तः परमानन्दो गीतिकामिमां व्याजहार। कट संकट हे मुकटधारी।

अस्यार्थ :—हे मुकट धारिन् कृष्ण मम संकटं संहर।
कश्मीर भाषाया "कट" शब्दो मेषाख्यं पशुं सूचपति।
हिन्दी भाषायां "कट" शब्दः छेंदनार्थे प्रयुज्यते।
व्यंग्यार्थश्च हे मेष श्रृगरूपेण त्वमपि मुकटं धारयसि मम स्कन्धै त्वं संकट रूपो स्थितोऽसि।

११. एष महानुभावो मार्तण्डतीर्थप्रवरे (मटनग्रामे) निवसति स्म। साधारण गृहस्थे स्थितोऽसौ कृषिकर्मणा स्वजीविकामर्जति स्म। स्वयमपि श्रीपरमानन्दवर्यः स्वरचितगीत

काव्ये "कर्मभूमेः कृषिकर्मयोगः" इत्याख्ये स्वश्रीमुखेनाभिहितान्
क० भा० "परमानन्द श्रोस अखजमीनदार"
स० भा० "भूस्वामीपरमानन्द कृषकर्मरतः सदा"

१२ श्रीपरमानन्दवर्यः काश्मीरभाषायामध्या त्मरहस्यवाद-निपुणः काश्मीरिकायाः कवयियाः लल्लादेव्या इव भावव्यञ्जना-मय स्वप्रतिभा परिचयदत्त्वा काश्मीरिक गीतिका काव्यस्पैकां नवी नतमा माभां प्रसारित वानू।

१३. श्रीमती गीतिका दैनिक साधारण धर्मकार्येषु देवालय-येषूत्सवेषु च प्रतिमापुरतो गायन्ति। ताश्च साधारण शब्देषु प्रयुक्ताः॥ परन्त्वेषामध्या त्ममयो रहस्यवादः साधारण जनानां कृते ज्ञातुं दुरूहो ज्ञायते।

१४. परमानन्दः सुदामा चरित-राधास्वयंवर शिवलग्ना दीनि सुबहूनि गीत काव्यानि निर्माय स्वं भौतिकं देहं मष्टादशा-शता धिकाशीतितमे खिस्ताब्दे परित्यज्य श्रीगोपाल कृष्णसायु-ज्यमाप्तवान्।

१५. प्रस्तुते ग्रन्थे ज्ञानयोगपरा "अमरनाथ हृग्दुहायात्रा" कर्मयोगपरा "कर्म भूमौ कृषियोगः" भक्तिरसपूर्णा "आशा-कुसमानि' परमानन्दस्य योगकर्मभक्तियोगादीनां प्रत्यक्षोदाहरण। न्यस्माकं समीपे सन्ति।

१६. एतासां गीतिकाना मनुवाद आंग्लभाषायां संपादितो-ऽध्यापकवर्येण श्रीमता जिन्द कौलेन। तस्यैवानुवादस्य किञ्चि-न्मात्रं सहायं लब्ध्वा मया श्रीपरमानन्द विरचित कतिपय

गीतिकानां संस्कृतभाषायां पद्यानुवाद संपादने दु:साहसो विभावसो खंद्योतप्रकाश दर्शनतुल्यः कृतः।

१७. यद्यप्यत्र त्रुटि बाहुल्यमस्ति तथा प्यत्र गुणग्राहिणो विद्वद्वर्याग्रगण्या महानुभावा भावुका रसिकगणाश्च मदीयत्रुटिपूध्यानमदत्वा केवलं मामकीय चाञ्चल्यपूर्णमा नसिकोत्प्लवंगतताया रसास्वादमवश्यं करिष्यन्ति। येन मदीयमानसिककृतार्थता बिदुषां सन्तोषश्च सभविष्यतीति निवेदयति विनीत :—

श्रीसुदर्शन स्वपितृ नाम धन्यः
रविकुल समुद्भूतो जगन्नाथः शास्त्री

—गुरुकुल—पत्रिका
माघमास—२०२९

---

# आशाकुसुमानि

आशि चात्रि वरतल आस अनाथ
दास कव छुस उदास अनाथ॥ १॥

( रूपान्तर )

आशां त्वदीयां मनसि प्रधार्य
प्राप्तोऽस्मि तेऽहं प्रतिहारभूमिम्।
दासं किमर्थं नयसे वृथा त्व
मुदासभावं शरणागतं माम्॥१॥

त्रियि ताप ह्वृमुत प्रेमुक स्नेह
नेह छम न चे विन ख्यम ना वेह ।
त्रेषि त्रेषि जन्म पिपास अनाथ ॥ दास०

( रूपान्तर )

दावाग्निकल्पैस्त्रिविधैः प्रदीप्तैः
संसारतापैः रतिनीरहीनम्
शुष्कं मदीयं जलजं हृदिस्थं
त्वया विना शर्म कथं भजेऽहम्
अनेकजन्मार्जिततृष्णया सदा
समावृतोऽहं विषयैर्विषोयमैः ।
ते यादपद्मे समुपागतं ननु
नोपेक्षितुमर्हसि देव मामतः ॥ ।२।

रूपान्तर

शुष्कं वितापैर्मम रागनीरं
लेभे न शान्तिं भवता विनार्तः
नाहं करिष्ये विषभक्षणं किं
समागतो जन्म शतै स्तृषार्तः ॥ । २ ।
इन्द्रिय हुदरावित छुम मन
संदरित लोल रेह छम न ज्यवन
दुदुमुत कर्मि कयकास अनाथ ॥ दास०

( रूपान्तर )

शान्तं मनः स्वेन्द्रियवर्गयुक्त
तथापि मे दीपितरागदीप्तिः ।

नोदैत्यभावेन विदग्धचेत:
सिञ्चामृतेनैव हि मामनाथम् ॥३॥ दास०

सास क्रुह छंडित आशावान,
अथ छुन यूर्यं फीर्यं फीर्यं यिवान ।
लभि यव. तव. वरन्यास. अनाथ ॥ दास०

(रूपान्तर)

तीर्त्वाशया कोशसहस्रभागान्
प्रत्यागत: शून्यकर: पुनश्च !
यथा तथा द्वारि तवैव नूनं
साप्नोम्यहं तद्भवत: स्वलाभम् ॥४॥दास०

होशन वु वूंचमुत रोशन छुय
वन क्या हाल पान. गोशन छुय
प्योमुत चानि आम खास अनाथ ॥ दास०

( रूपान्तर )

स्मृत्या सदा वञ्चित एव दास:
सोऽहं च ते दृष्टिपथे गतोऽस्मि ।
इशा च मे ते श्रुतिगा त्वनाथ:
वदामि किं राजकुले गतस्ते ॥५॥ दास०

पंजि यी तीं करनाव त. मे
ज्यत ज्यत मत. मर. नाव त. मे !
परमानन्द योग. अभ्यास. अनाथ ॥ दास०

( रूपान्तर )

अच्छोभनं साधु सुकर्म कारय
प्राप्त पुनर्जन्मशतं निवारय !

अभ्यासयोगेन जगत्यनाथम–
प्यानन्दकन्दं वह मां प्रभो परम् ।।६ दास०

प्रथमा परिजातस्य मञ्जरी ज्ञानयोगगा
जगन्नाथ कृता सैषा परमानन्द प्राप्तये ।।

—(संस्कृत 'प्रतिभा')
साहित्यअकादेमी–नवदेहली
—गुरुकुल पत्रिकायां च
हरिद्वारे

काश्मीरभाषाया रहस्यवादगीतिकाव्यकर्तृषु प्रसिद्धः परमानन्दः काश्मीरेषु शतकैकाब्दात् पूर्वं बभूव। मार्ताण्डतीर्थवासी महामना एष लल्लादेवीव अध्यात्मभावव्यञ्जकैर्गीतैः काश्मीरभाषायाः कामपि। नवीन तमामाभामाधत्त। तदीय गीतेभ्यः कानिचिदत्र भक्तियोगविषयकाणि संस्कृतेऽनूद्य दत्तानि !

—

## आशुतोष रुद्री

प्रपन्नपारिजाताय
ज्ञानमुद्राक्षपाणये
जगत्कल्याण सक्ताय
नमः शान्ताय तेजसे

हे आशुतोष वृषवाहन शूलपाणे
हे शंकर प्रणतकल्पतरो पुरारे
हे वामदेव करुणार्णव हेऽष्टमूर्ते
संसार कूप पतितस्य भवावलम्बः ॥१॥

हे भक्तवत्सल कृपापर पद्मपाद
हे आर्ति नाशनपटो कृपणार्तिहारिन्
हे पार्वती सुखद पावन कालनाशिनू
संसार............ ॥२॥

हे साधुवत्सल दयार्णव रोगहारिन्
हे पुण्यकाय भवसागरपारकारिन्
हे काल कूट भयना शन दीनबन्धो
संसार .......... ।३।

हे रामपूजित सुरेश परात्परेश
हे धूर्जटे पशुपते पशु पाशानाशिन्
हे शर्व षण्मुखपितर्ज़गतो निवास
संसार......... ।४।

हे भीम वासुकि विभूषितकण्ठशालिन्
हे रुद्र हे त्रिनयन त्रिदशेन्द्रसेव्य
हे उग्र कालहर कल्पित भस्मकाय
संसार............ ।५।

हे नीलकण्ठ वृषभध्वज कालकाल
हे शैलजाप्रिय जगद्धर दीनबन्धो
हे विश्वनाथ सुरपूजित पद्मकान्त
संसार............ ।६।

हे पद्मसद्मकरलालितपादपद्म
हे पद्मनाभनयनार्चितपादपद्म
हे पद्मबन्धु मुकटार्चितपादपद्म
संसार.. ... .. ।७।

ईशानदेव मदनान्तक पापहारिन्
कैलासवास शरणागतपाशनाशिन् ।
गंगाधर त्रिपुरहन् गजचर्मधारिन्
भस्माङ्गराग भगवन् भवते नमोऽस्तु ।८।

विश्वेश विश्वभयनाशन विश्वमूर्ते
विश्वात्मक सफलविश्वमनोनिवास
विश्वम्भर विगतविश्व विकल्प जाल
विश्वैकवन्द्य भगवन् भवते नमोऽस्तु ।९।

जानामि नाहं तव पादसेवनं
जानामि नाहं तव रूपचिन्तनम्
जानामि नाहं तव गीतगायनं
त्वां चन्द्रमौलिं शरणं प्रपद्ये ।१०।

संसारपाशैर्निविडैर्निपीडितं
नानाविधैः पापझषैश्च त्रासितम्
आपातितं दुस्तर मोह सागरे
मां नाथ भीतं जगतः समुद्धर ।११।

आशुतोष स्तुतिः सैषा संसारदुःखहारिणी
एतां भक्तया पठन् नित्यं-शिवसायुज्यमाप्नुयात् ।१२।

——

# कर्मभूमौ कृषियोगः

१ कर्म भूमिकायि दिजि धर्मुक बल ।
संतोष ब्यालि भुवि आनन्द फल ॥

( रूपान्तर )

कर्म भूम्यै धर्मबलं देहि मानव प्रत्यहम् ।
सन्तोषबीजसभूतमानन्दफलमाप्नुहि । ।

२ द्वयि प्राण दान्द-जूयं दिन त रात वाय
कुम्भक कुर जोर तिम नय लाय
हिल कर युथ न वीड रोज्रि काह थल-सं०

( रूपान्तर )

प्राणापानौ वृषौ विद्धि दिवारात्रमनर्गलम् ।
वहन्तौ तौ हलंकुम्भवेत्रैः प्रहर नित्यशः ।
उद्यमः साधय पूर्णो रिक्तो न स्यात्स्थलः क्वचित्-सं०

३ लोल के हल फाल तुल नावित
धैर. यट फुरि दत फुटरावित
वैरुक स्रेह युथ न रोज्यस तल ॥सं०

( रूपान्तर

स्नेह हलहत्यात्वं कुरु भूमिविदारणम्
धैर्यमृद्दारकास्त्रेण मृत्पिण्डभेदनं कुरु
वैराद्रता धरामध्ये यथा न स्यात्तथा कुरु-सं०

४ विचार बठ्य त बेर लदित क्यत
श्रुच यन द्यव शुजरावित वत

समदृष्टि पात्‌जन अद फेरि जल–सं०

( रूपान्तर )

विचारतटमुण्डानि सम्यक् निर्माय यत्नतः
श्रुतिवाक्य खनित्रैस्त्व मार्गसशोधन कुरु
समदृष्टिपातज़ नीर ततः सिञ्च समे स्थले–सं०

५ सोत छुय दोह तार मुत यावुन
पजि नजि साता रावरावुन
वव ब्योल मव प्रार करु मंगल–सं०

( रूपान्तर )

मधुमास समाकारे दिनत्रयसमागमे
मदघूर्णिततारुण्ये कालक्षेपो न शोभनः
बीजवाप कुरुष्व त्वं भद्रपाठसमन्वितम्–सं०

६ त्र्युरित स्फुरनायि नाम्य वुडर
सुर के रवि चक सूतिन भर
इन्द्रिय गग-रन करु वठल–सं०

( रूपान्तर )

स्फुरणाविलद्वाराणि कृतानीन्द्रियमूषकैः
प्रणवस्वरपङ्केन समाच्छादय तानि त्वम्
विषयान्मूषकाकारान्विद्रावय ततः स्वयम्–सं०

७ भक्ति हंजि न्यंदि फेरि साधनायि खीत्य
ह्यलि नेरि तप के पप सग सूत्य्
संभावनायि फुलि पंपोष डल–सं०

( रूपान्तर `

भक्तिजैर्भूम्सिंस्कारैः फलति साधनास्थली
तपसा पाक सेकेन क्षेत्रमङ्कुरितं भवेत्
संभावना नयति तां विकासं स्थल पद्मिनीम्—सं०

८ विषये पश वार रछिनावख
तिम. नय अथि युथ न. खीत्य ख्यावख
भाव चि राव. छिय नेर निष्कल—सं०

( रूपान्तर )

विषयपशुभ्यः सम्यक् रक्षेत्सस्यमिवार्जितम्
तैर्नाशं न यथा गच्छेत्सस्यं प्राणनियामकम्
भावों रक्षति तत्सस्यं यः प्राप्तो निष्कलं पदम्—सं०

९ हेलि यलि नेरि त्यलि सपन्यस क्राव
वैराग द्राति सूत्य लून्य लून्य त्राव
संबन्ध रुस्त माव्य लाव्यन वल—सं०

( रूपान्तर)

फलिते क्षेत्रजे सस्ये नम्रता स्वयमापतेत्
वैराग्यस्य लवित्रेण लुनीहि क्षेत्रजं फलम्
सम्बन्धरज्जुसंबद्धं क्षेत्रजं तत्समाहर—सं०

१० मटि खस नचि रज़ि मंटि मंटि सार
साध नि अन भाय वन्ध तय यार
नित्य नेम. सुभरित अद. समि खल—सं०

( रूपान्तर )

कर्तव्यकर्मपाशैस्त्वं वद्ध्वा तत्क्षेत्रजं फलम्
भ्रातृबन्धुसमेतस्त्वं स्कन्धे चारोप्य तन्नय
नित्यं सञ्चयशीलस्य स्वान्नराशिर्भवेन्महान्-सं०

११ त्रिगुण त्याग नोम अक गुण लद
निर्माण. प्रावख निर्वान. पद
शम तत्य तम दित त. कर कुशल-सं०

रूपान्तर

त्रिगुणत्यागरूपं तदेकं स्तोमं समाहर
मानापमानयोस्तुल्यो निर्वाणपदभाग्भव
श्रमं नीत्वा सकुशलं शमं गच्छेत्समन्ततः-सं०

१२ ध्यान. धारनायि वान मुंड विस्तार
ज्ञान. दान. खास. खास घास. निष चार
मन. के अनुभव. वार. दित छल-सं०

( रूपान्तर )

धारणाध्यान संभूतं स्थाणुं विस्तारय स्वयम्
तृणाज् ज्ञानकणान्सर्वान्वियोजय विशेषतः
मनोऽनुभवदण्डेन तृणानि शोधयेत् पुनः-सं०

१३ त्याग के अथ. सूत्य वार. छुम्ब. नाव
प्रुन त. जग भ्युन २ फुट जन थाव
ज्ञागि रोज़ लाग. नयि त्रावित ज्वल-सं०

( रूपान्तर )

तृणान्नवण्टनं सम्यक् कार्यं त्यागकरोद्भवम्
श्वेतरक्तमयं त्वन्नं भिन्नं भिन्नं समाहर
निद्रां तंद्रां परित्यज्य पुनर्जागृहि जागृहि—सं०

१४ तूलित अद थव अबरस माल
सोहम् हायक सूत्थ अद नख. वाल
लुति भार वात नावित खन. बल—सं०

( रूपान्तर )

तोलयित्वान्नसंपतेः स्तोममेकत्र संचिनु
सोऽहं तुलां समाधाय कुरु स्वर्णविमोचनम्
लघुभांर च तत्सम्यक् स्थानं खनबलं नय—सं०

१५ शम. दम. यम. नेम. घाट वात. नाव
शान्ति श्रद्धायि जल पकनाव नाव
पानस शिह. लित मानसबल—सं०

( रूपान्तर )

शमैर्दमैयमैश्च त्वं नौकायां केन्द्रितं कुरु
शान्ति श्रद्धाजले संस्थां नौकां संवाहय स्वयम्
मानसीमिव तां शान्तिं समाधत्स्व मनस्विनीम्-सं०

१६ लाग. नयि वालि माल आगस तार
खाल्य युथ न. रोजि. हाल्य जागीरदार
फाज़िल त. वांकँ नेरि कस तल—सं०

( रूपान्तर )

भागं विभज्य यत्नेन पत्ये यच्छेत्स्वयं तदा
भूपः कर्मकरा रिक्ता यथा न स्युः स्वभागतः
तथा साध्यस्त्वया यत्नः स्वस्मैस्यादृणमोचनम्-सं०

१७ चारित भिथि व्योल सञ्चित थव
सोंत येलि यियि त्यलि फलि २ वव
उपकार उपदी नव नव थल–सं०

( रूपान्तर )

उध्दृत्य च पुनर्बीजं तस्माद्ग्राह्यं प्रयत्नतः
समागते वसन्ते च कणशो वप तत्स्वयम्
उपकारात्पुनः क्षेत्रं कर्मवज्जायते नवम्–सं०

१८ योग. मायायि हुंद भोगी आस
यी चिय दूय छय सूत्य तिय कास
साधु नाव प्युय तय स्वाद मो डल

( रूपान्तर )

भोगभुक् योगमायाया भव नित्यं समाहितः
यज्जातं मनसि द्वैतं तन्निवारय बोधतः
साधुरसि स्वभावात्त्वं पदमेकं न संचल–सं०

१९ कर्म फल सोरिय गुरुशब्दय
संचित क्रियमान प्रारब्धय
कर्म. कांड. वनि नेरि ज्ञान. वुज़मल–सं०

( रूपान्तर )

कर्मफलसमाप्तिञ्च प्राप्स्यसि गुरुवाक्यतः
सञ्चितं क्रियमाणं च प्रारब्धपतितं तथा
ज्ञानविद्युत्कर्मकाण्डः स्फुरेत्स्वयं समन्ततः—सं०

२० स्वयं प्रकाशिकि विज्ञानय
त्राविथ मान भियि अभिमानय
प्राविथ रोज द्वादशान्त मण्डल—सं०

( रूपान्तर )

स्वयंप्रकाशमानेन विज्ञानेन प्रयत्नतः
मानाभिमानमूलञ्च तत्त्याज्यं दूरतः स्वयं
मण्डलं द्वादशान्तस्य प्राप्तव्यं गुरुवाक्यतः—सं०

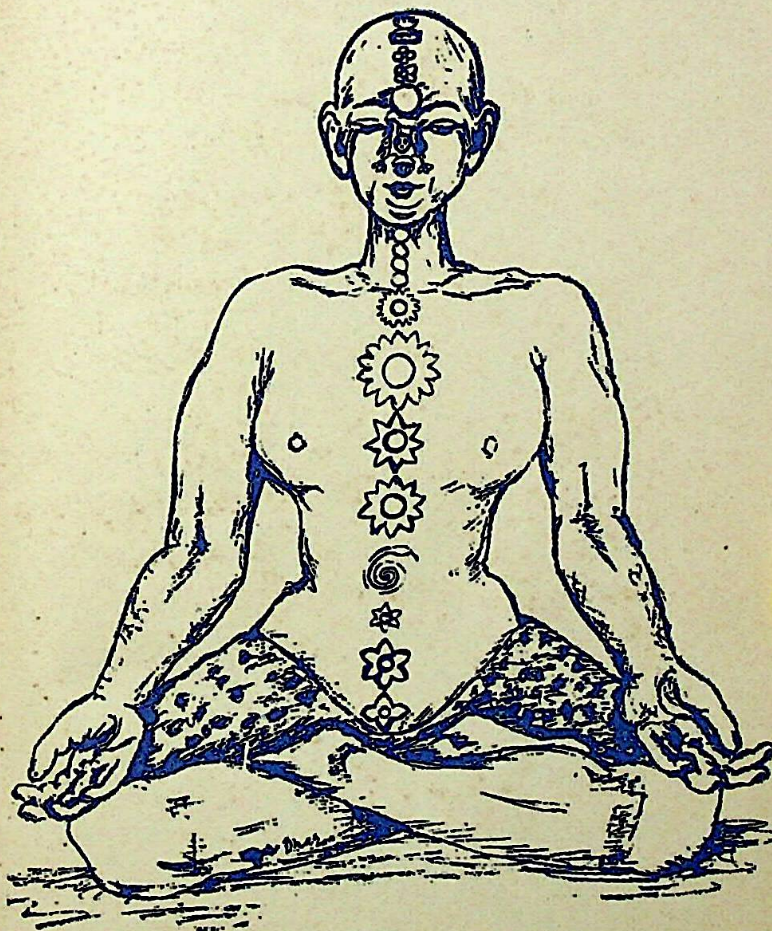
२१ परमानन्द ओस अख ज़मीन्दार
हूरित धन ह्यार सूरित लार
वांग.ज वारिच चजिस गांगल—सं०

(रूपान्तर)

भूस्वामी परमानन्दः कृषिकर्म रतः स्वयम्
स्वर्णनिर्मोचनं कृत्वा निर्वाणपदमाप्तवान्
वसन्नतिथिवद्गेहे बभूव मुक्तबन्धनः—सं०

तृतीया पारिजातस्य मञ्जरी कृषिकर्मगा
जगन्नाथकृता सैषा परमानन्दलब्धये ॥

(श्री कृष्ण जन्माष्टमीदिने)
—गुरुकुल पत्रिकायाँ



स्वर्गीय श्री १०८ परमानन्द जी

षट् चक्रभेदनयोगाभ्यास

सहस्रार, आज्ञा, विशुद्ध, अनाहत, स्वाधिष्ठान, कुण्डलिनी, मणिपूरक, मूलाधार,

# श्री अमरनाथ रहस्यम्

सितातपत्रं यस्येन्दुः
स्वप्रभापरिपूरितः ।
चामरं स्वर्नदीस्रोतः
स एकः परमेश्वरः ।

१ परानन्दाम्बोधेरुदयति पराख्या शशिकला
प्रवृद्धा तन्वङ्गा हृदयगगने पञ्चदशभिः ।
प्रनीता सर्वाङ्गी हिमगिरिगुहावासनिरतैः
सहस्रारेऽह्नोभिर्गजवदनधाम्नश्शमपरैः ॥

२ प्रभाते योगीन्द्रैः शमदमपरैर्योगनिरतैः
क्रियासक्तैर्विप्रैर्व्रतनियमयुक्तैश्च यजने ।
व्रजे गोपैर्गोभिर्व्रजयुवतिभिश्चन्द्रवदनः
वृतो देवैर्दैत्यैरमृतमथने सोऽमरपतिः ॥

३ पथि श्रान्तैः पान्थैर्बहुविधश्रमैर्मार्गणपरैः
महादुर्गे मार्गे विविधबहुबाधापरिवृते ।
नमो यस्मै कस्मैचन भवतु देवाय महसे
मनः स्थैर्येप्राप्तो यतिभिरिव योगेऽमरपतिः ॥

४ अनाकारस्तुर्यो गजवदनबिम्बात्समुदितः
परारूपोनादो गणपतिविहारे श्रुतिगतः ।
चतुष्पत्रात्पद्मात्सहजविमलोऽमाख्यकलया
गतो मूलाधारादनुविधिपदं सोऽमरपतिः ॥

इति चतुःश्लोकात्मकममरनाथरहस्यम

# अमरनाथ देह-गुहा यात्रा

१ मन थिर कर पूजन प्रभो
मन्त्र पर शिव-शम्भू

(रूपान्तरित)

मनः स्थैर्यं समादाय प्रभुं पूजय प्रत्यहम् ।
मन्त्रात्मकं शिवं शम्भुं महामृत्युञ्जयं जप ॥

२ देह गुफि सत्-चित्-आनन्द लिंग्
मन. पीठस प्पठ ब्यूठ निसंग
लूक दप्यतनस कैलास श्रंग-मन०

(रूपान्तरित)

देह-गुहा मनः पीठे सच्चिदानन्दरूपिणम्
निसङ्गं वर्तमानं त्वं प्रभुं पूजय प्रत्यहम्
लौकिके व्यहारेऽत्र प्रभो कैलासवासिनः
प्रतिमाऽमरनाथस्य यात्रिभिः पूजिता सदा-मन०

३ कन थव सरस्वती छय वनान
वन्य् वन्य् पान छुय ना सनान
नाम. रूप वुन्य भ्युन २ बनुन-मन०

(रूपान्तरित)

सरस्वती समाम्नाति श्रुतिगोचरतां गतम्
महात्मभिः समाख्यातं तथापि त्वं न बुध्यसे
नामरूपात्मकाद्विश्वाद्भिन्नं भावय स्वं प्रभुम्-मन०

४ लीला यि छय अमरनाथची
देह–दार सान एकान्तची
शम-दम गुफ प्रशान्तची–मन०

(रूपान्तरित)

स्तुतिरमरनाथस्य देहेऽहंभाववर्जितैः
शम-दम समायुक्तैः पठनीया समाहितैः
एकान्ते हृद्गुहावासे यत्र शान्तिं समाप्नुयात्-मन०

५ त्राहि माम् पर यात्रा चू. कर
हर मुख पनुनय पान चूं वर
गुफि मेन यि गुफ छि बराबर–मन०

(रूपान्तरित)

कुरु यात्रां पर्वं काले त्राहि माँ च जप सदा
हरमुखे स्वमात्मानं सर्वतो वरणं कुरु
गुहा हृदय नाथस्य सा गुहा संविभावय–मन०

६ गुड. गणपत यारुक गणेश
दूर मो ज्ञान रूजित चि निश
मूलाधार द्वारुक महेश–मन०

(रूपान्तरित)

प्रथमा श्रीगणेशस्य प्रतिमा शुभलक्षणा
गणपतिविहारस्था ऋद्धिसिद्धिप्रदा सदा
मूलाधारे महेशास्य द्वारपो दारकः स्थितः–मन०

७ ब्रह्मा युस सृष्टि करतार
स्वाधिष्ठान. शुराहयार.
षठ् दल षण् मुख जन कुमार—मन०

(रूपान्तरित)

सृष्टिकर्ता स ब्रह्माख्यो विहारे षोडशाख्यके
षण्मुख इव षट्पत्रे स्वाधिष्ठाने सरो रुहे
संस्थितः सर्ववेदात्मा सर्ववित्सर्वकर्मकृत्—मन०

८ शिवपोरि-फेरि कुण्डलिनी
फेर वन्य् प्राण. तति. जल कने
सत समुंदुर सनि त वुगने—मन०

(रूपान्तरित)

जलावर्तें शिवपुरे सार्धत्रिवलयात्मिका
कुण्डलिनीतिविख्याता कुण्डलाकारवत्स्थिता
जलानीव विवर्तन्ते यत्र प्राणाः समन्ततः
समुद्रसप्तकं तत्र निम्नोन्नतपदं गतम्—मन०

९ अष्टदल सु द्राव पम्पोश डल
यूयं फेर तुरकुन मो चू डल
विचार अच् त संसार चल—मन०

(रूपान्तरित)

अष्टदलमयैः पद्मैः पूरितं प्रकृतेः सरः
निवर्तय स्वमात्मानं संसारदुःखसागरात्
संयोजय विचारेण ध्रुवे शुद्धे शिवे पुनः—मन०

१० ह्यू़र ह्यू़र पक न्यूर न्यूर वात
दू़र प्योमुत छुख कव वशात् ?
गत प्रावनू़च. बोज कथ त. वात.—मन०

(रूपान्तरित)

ऊर्ध्वं गच्छन्सत्वनिष्ठः शिवसायुज्यभाग्भवेत्
किमर्थं पतितो दूरे कर्मपाशैर्वशीकृतः
निर्मलां मुक्तिदां वाचं शृणु मानवसत्तम—मन०

११ तीर्थ रुस्त मा कुनि कांह् पुदा
वेदन ति ओंकार विन पदा
जीवन मुक्त परमात्मा—मन०

(रूपान्तरित)

ओंकाररहितो मन्त्रस्तीर्थहीनः स्थलः क्वचित्
न भवेत्परमात्मानं जीवन्मुक्तिर्विना क्वचित्
सर्वत्र भावय देवं हृत्स्थं मानव पुङ्गव—मन०

१२ नाभिदेश दशदल संगमस
यम्य च्यांव्य लोक सत्संगमस
कृष्णस स्थावरस जंगमस—मन०

(रूपान्तरित)

नाभिदेशे दशदले सरोजे सत्समागमे
चराचरमयमत्र श्रीहरेः सङ्गमं स्थितम्
यमासाद्य जनाः सर्वे मुच्यन्ते सर्वकिल्विषैः—मन०

१३ मन्दिर मुछत वुछत चन्द्रयार
सपनिय तति हरिचन्द्रयार
विजयेश्वर जन्म जन्म पार—मन०

(रूपान्तरित)

मन्दिरं विजयेशस्य कृष्णचन्द्रविराजितम्
द्रष्ट्वा तत्र भवेन्मित्रं हरिश्चन्द्रो महामनः
मुच्यते सर्वपापेभ्यः पारं प्राप्नोति मानवः—मन०

१४. कज्य आवित वात थज्यवोर
लज्य तति शिव जटा चुपोर
अनाहत मण्डलस थाव खोर—मन०

(रूपान्तरित)

संकल्पेच्छे परित्यज्य थज्यवारेति नामके
ग्रामे शिवजटा तत्र परितो राजते सदा
अनाहतसमाम्नातं मण्डलं संविशेत् पदम्—मन०

१५ छ्यप छुंढ ह्यथ वात छुण्डबल
विशुद्ध चक्रच जीव थल
देव पूज कर जीव भाव चल्—मन०

(रूपान्तरित)

यथा तथा विशुद्धाख्ये चक्रे छुण्डबलोपमे
जीवभावमतिक्रम्य देवपूजां समाचरेत्
पच्यते जीवलोकोऽत्र सस्यवत् जायते पुनः—मन०

१६ मझ्य वात खिलनस त खेलनस
पानय जि पानस मेलनस
तील जन तेलस तीलनस—मन०

(रूपान्तरित)

तिले तैलं यथा व्याप्तं देहे चात्मा तथैव हि
स्वयमेवात्मनात्मानं संयोज्यं परमात्मनि
जीवब्रह्मैक्य ज्ञानाय क्रीडन्गच्छेच्छिवालयम्—मन०

१७ वातखय वति वति वीर सिरन
तति छिय न वातान वीर सिरन
वर्जवाव सूत्य बलवीर ईरन—मन०

(रूपान्तरित)

शक्तश्चेद् मार्गगमने रहस्यपरिपूरिते
वीरा यत्र निवर्तन्ते सरिण्ये वायुनिर्भरे
वात्या यत्र प्रकम्पन्ते बलवीराः सहस्रशः—मन०

१८. मन निश दूर कर लय विक्षेय
नावित गणेशस सारिय लेप
चलिनय त सुय गव रत्नदीप—मन०

(रूपान्तरित)

मनसो लयविक्षोभं परित्यज्य स्वदूरतः
स्वप्रकाशं महादीपं गणेशं निर्मलाकृतिम्
निश्चलं रत्नदीपं तं भावयेत्स्वे हृदि स्थिरम्—मन०

१९ पुशराव पान परमेश्वरस
वातीथ रुज मामलेश्वरस
प्रदक्षिण कर तथ मन्दिरस—मन०

(रूपान्तरित)

मामलेश विहारस्थं पावनं परमेश्वरम्
परिक्रम्य तमात्मानमर्पयेद्देवपूजने
त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहंभावेन पूजयेत्—मन०

१२ भर्गतीर्थं प्यठ छुय स्वर्गद्वार
वर्ग निश मशिरिथ मो च प्रार
भाव अर्घ. पुष्प. पूजा छिय सार—मन०

(रूपान्तरित)

भर्गतोर्थाख्यके स्थाने स्वर्गद्वारं मनोहरम्
अर्घ्यं पुष्पसमैः प्राणैः सारवित्सुसमाहितः
भावयेत्तत्र तं देवमहंकारविवर्जितः—मन०

२१ कंठ देश युस चोदाह भुवन
नील गंगि प्यठ बोज वावजन
तति तोर पवन.य ओत दवन—मन०

( रूपान्तरित )

कण्ठदेशगतोयोऽसौ भुवनानि चतुर्दश
व्याप्य स्थितो महाविष्णुः प्राणवाहः सदा स्थितः
आनीलगंगासंस्थानाद्वावजनसमीपतः
वहति पवनस्तत्र दिवारात्रमनर्गलम्—मन०

२२ मंजिल छु मज्य् मंज्य् वारयाह
छुट बनुन मुट बोज वारयाह
.अक्रिय। द्वारच्य यी क्रिया—मन०

( रूपान्तरित )

अधिकं दुर्गमं मार्गं मध्ये मध्ये प्रतिष्ठितम्
सारगर्भं समासेन बुद्धिमान्सुविचारयेत्
अक्रियैव समाम्नाता देहद्वारगता क्रिया—मन०

२३ ईश देश उत्तम शेषनाग
ह्यक खय त. तत्य दिन—रात ज्ञाग
राग त्राव .प्राव महा वैराग—मन०

( रूपान्तरित )

शेषनागस्य पर्यङ्के उत्तमः पुरुषः स्थितः
निद्रां तन्द्रां परित्यज्य विरक्तमनसा सदा
दिवारात्रं समाराध्यः रागमुक्तैर्विवेकिभिः—मन०

२४ त्याग पंचकृत पंचतरंग
सत् समुदुर. की चित् तरंग
पद्मनाभस् छिम. यिम. ति. रंग—मन०

( रूपान्तरित )

चित्समुद्रे समुद्भूतं पञ्चेन्द्रियतरङ्गकम्
पञ्चीकृतं महाभूतैस्त्याज्यं तद्धीमता स्वयम्
पद्मनाभः शेषशायी नानारूपधरः स्थितः—मन०

२५ खस त अस्त अस्त पंचाल. सूय
सोहम् भैरव वालसूय
टुक युथ न लगि अति लालसूय–मन०

( रूपान्तरित )

शनैः शनैः समारुह्य पञ्चालाख्यं महानगम्
रक्षेद्रत्नं स्वमात्मानं सोऽहं भैरवपर्वते
पशुभावमतिक्रम्य स्वात्मस्थं चिन्मयं स्मरेत्–मन०

२६ जिन्द रोज बोज जिन्दय मरुत
गर्भयात्रायि अपोर तरुन
सतीये छु ततिये शिव वरुन–मन०

( रूपान्तरित )

समाहितमनोयोगी भवेज्जीवन्मृतोपमः
गर्भयात्रां समारुह्य पारं गच्छेद् महामनाः
शक्तिरूपासती तत्र शिवेन सह मोदते–मन०

२७ शुजरिथ संकल्प निशि मन
रूशि–राग रुस्त काल–देश मन.
शिहलिथ ईश अनीश. मन–मन०

(रूपान्तरित)

संकल्पहीनमनसा रागद्वेषविवर्जितः
देशकालविभागज्ञः प्रशान्तमनसा पुनः
नेशत्वंनाप्यनीशत्वं कामयेद्बुद्धिमान्नरः–मन०

२८ छि परा त पश्यन्ती पशन्
मध्यमा वैंखरी मा पश्यन्
यिछ अवस्था छि तप. ऋषन्—मन०

( रूपान्तरित )

परा पश्यन्तीद्वारेण पश्यन्त्यात्मनि तं विभुम्
वैखरी मध्यमाभ्यां च प्रवेशोनात्र योगिनः
तामवस्थां प्रपद्यन्ते ऋषयः क्षीणकल्मषाः—मन०

२९ भाव अमरावतीये च भाव
मल बभूत छल गृहस्थ भाव
शिव पादन पान पुशिराव—मन०

( रूपान्तरित )

भावयामृतनद्यां भावं स्नात्वा भूतिविभूषणः
गृहस्थमलनिर्मुक्तः शिवपत्सु स्वमर्पयेत्
यं प्राप्य न निवर्तन्ते नराः संसारवर्त्मनि—मनः

३० रूदमुत गुफि युस् शुद्ध. त. बुद्ध
नव निध अधीन तस. त. अष्टसिद्ध
आकाशवत् केंह. न. घट. त. वध—मन०

( रूपान्तरित )

शुद्धो बुद्धः स्थितस्तत्र गुहायामष्टसिद्धिभाक्
आकाशवत्स्थितः सोऽयं वृद्धिक्षयविवर्जितः
नव निधिपतिश्चैव पारिजातः शिवो मतः—मन०

३१ नंग. मुत. हंग. तय. मंग रोज.
ईश्वर. दर्शन. शब्द बोज़.
लय. कर. त. ध्यान दयि. घर. सोज.--मन०

( रूपान्तरित )

आश्चर्यचकितस्तत्र नग्न उन्मत्तवच्चर
ईश्वरदर्शनाज्जातं शब्दं श्रुतिमनोहरम्
ध्यानगम्यं देवगृहे कुर्यात्तालल्याश्रितम्--मन०

३२ गुफि मंज गुफि. वात पनञे.
त्राव देवियि. त. देवता अन्ये
छ्यञि छन यिम वभूत कञे--मन०

(रूपान्तरित)

गुहामध्ये स्थितं देवं हृद्बिले भावयेच्च तम्
तोषणात्तस्य देवस्य प्रीणन्ति सर्वदेवताः
निस्सारा नात्र तिष्ठन्ति पाषाणा भूतिभूषिताः-मन०

३३ कन्य. मंज लाल. सुय. मन्य. मंज
छ्य निरुक. छुञ छुञ. रुञि. मंज
तप कर देह अरण्य मंज--मन०

( रूपान्तरित )

मनः पाषाणगं देवं स्वप्रकाशं मणिमिव
सन्तं नूपुरशब्दाभं भावयेच्चिद्बियत्स्थले
पावयेत्तपसात्मानं देहारण्ये मुनिरिव--मन०

३४ सोऽहं शब्द प्रेम प्रणवय
आज्ञा शिखरस नाव रवय
तालव कपूत तस आलवय—मन०

(रूपान्तरित)

प्रणवप्रियशब्दोऽयं सोऽहमात्मा जपेन्नर:
आज्ञाशिखरनामानं पदंन्यस्येत्प्रयत्नत:
नेत्रकपोतयुगलं कुरु नीराजना विधि:—मन०

३५ सहस्रदल लय. गत. चू. प्राव.
ब्रह्मरन्द्रस. छु. निष्कल स्वभाव
दम. च्य. दमालि. कर. त. काव.—मन०

(रूपान्तरित)

निष्कले निर्मले शुद्धे स्वभावपरिपूरिते
सहस्रारे ब्रह्मरन्द्रे लयं नीत्वा निजं मन:
प्लवमानो विकासेन स्वानन्दमदघूर्णित:—मन०

३६ पकवन्य. छि. द्वारस. नद (मथ.) मथान.
थान. गव. जि. यति विहान वुथान.
समाधि. मंज. युथ. ह्यू. व्युथान.—मन०

(रूपान्तरित)

ज्ञानामृतनदी नित्यं वहति द्वारमर्दिनी
प्रशस्तं स्थानमाख्यातं स्वतन्त्रा यत्र संस्थिति: ।
समाधौ योगिनो नूनं व्युत्थानवत्समाहिता:,मन०

३७ पननुय. पान. पानस. चमुन.
यि. चमुन. ति. समुन. ती. शमुन.
अत्य्. वुहुन. लोल. नार. अत्य. हमुन.—मन०

(रूपान्तरित)

स्वयमेव स्वमात्मानं ज्ञात्वा धीरः प्रमुच्यते
यद्भावनं तदादानं तत्रैव शमनं पुनः
यत्रोदेति प्रमा प्रेम्णस्तत्रैवास्तं गमिष्यति—मन०

३८ युथ. थान. छुन. प्रोव्मुत यमन
तिम.वय. ज़ोन. ब्रूंठय. आव. यिमन.
परमात्मा पर्ज. नित. यि. मन.—मन०

(रूपान्तरित)

स्थानमेतद्यमेनापि नाप्तं जन्मशतैरपि
प्राप्तं तैर्मुनिभिर्नूनं येषामापतितं पुरः
प्रत्यक्षागममात्मानं ज्ञात्वा धीरः प्रमुच्यते—मन०

३९ तति. फोरुवुन. अनाहत. नाद.
स्वप्न. अन्त. त. सुषुम्नायि. आद.
तुर्या. त. तुर्यातीत. समाध. मन०

(रूपान्तरित)

तत्र स्फुरति वै नादोऽनाहतोऽनर्गलः
स्वप्नान्ते च सुषुप्त्यादौ तुरीयातीतयोः सदा
समाधौ मुनिभिर्ज्ञातं तन्निष्कलं निरञ्जनम्—मन०

४० फीरित. इडायि. किन्य्. संगम्स.
रस पूर्णमय् खतुमुत. त. वस.
तति श्राद्ध. करुन. छुय. यस. त. तस.–मन०

(रूपान्तरित)

इडया पुनरावृत्य प्राप्य स्थानं सुसङ्गमम्
आरुह्य रसपूर्णेन मनसावतरणं कुरु
श्रद्धया पितृभ्यः दानं (श्रद्धं) दद्यात्तत्र यथाविधिः–मन०

४१ गुफ. चल. च. त्रावित. तस. शिवस
यस. रुस्त. छु. न. कूंछा चितस
पान. पुशिरावुन. छुय. चे. तस.–मन०

(रूपान्तरित)

त्यक्त्वा गुहां भजेच्छम्भुं यं विना नैव चेतना
समर्पय स्वमात्मानं चैतन्याय परात्मने
यद् गत्वा न निवर्तन्ते धीरा शान्ताः महाशयाः–मन०

४२ शिव. शिव. ध्यान. निश. मो. च. डल.
चम. छय. प्रकृत. पुरुषस. म. वल.
कुर. यि. चित्रकार. मायायि. छल.–मन०

(रूपान्तरित)

शिवोऽसि शिवध्यानं त्वं मनागपि न विस्मर
पञ्चभूतमयं देहं पुरुषाद्विद्धि त्वं पृथक्
चित्रितं मायया रूपं रज्ज्वौ सर्पभ्रमो यथा–मन०

४३ युन. गछुन. छुय. चिन्मात्रा.
ज्ञानियस. यी. वुछिंन्य यात्रा
पनञी. छि. वनञी. वारता—मन०

( रूपान्तरित )

आगमापायरहितो जीवश्चिन्मात्ररूपकः
ज्ञानामृतेन तृप्तस्य यात्रा भवति ज्ञानिनः
अभिव्यक्तिर्निजातत्र पुण्यवार्ता स्मृता बुधैः—मन०

४४ तृप्त. नव. द्वार. वात. नव. दल.
वातित. चलिय जन्म. च. वदल
देहयात्रा गयि यी सफल—मन०

( रूपान्तरित )

नवद्वारं निरुद्ध्यैनं पुरं नवदलाभिधम्
गच्छेद् यत्र पुनर्जन्म न प्राप्नोति नरः पुनः
सफला भवति यात्रा देहकर्मसमुद्भवा—मन०

४५ देह. छुय. वनुमुत. देव द्वार
संसार. जंगलुक. दीवदार.
दान. कर. दान. जान. देह. उधार.—मन०

(रूपान्तरित)

संसार वनगो देहो देवदारुतरूपमः
देवानां द्वारमाख्यातं मानुष्यं जन्म दुर्लभम्
देहनिर्वाणदः प्रोक्तो दानज्ञानादिभिर्बुधैः

४६ फिरुन. छुय. न. अद. त्रिभुवनस.
वाति. त तत. विष्णु. भुवनस
यमलस. त. कमलस. भवनस. मन०

(रूपान्तरित)

पुनरागमनं नैव भुवनत्रयभूमिषु
प्राप्य विष्णुपद सम्यक् पुनरागमनं कुतः
यमलः कमलस्तत्र भवनश्च सरस्त्रयम्-मन०

४७ भर्गपाद पूज संसर्ग नेर
चमकीय. स्वप्रकाशय. अन्यर
चल. नय. जन्म. जन्म. किय, बखेर.-मन०

(रूपान्तरित)

भर्गपादार्चनं कृत्वा स्वयं संसर्गतो मनः
मोचयेत्स्वात्मज्योतिःस्थं भावयेदन्धतापहम्
जन्म क्लेशविनिर्मुक्तःप्राप्स्यसि परमं पदम्-मन०

४८ भर्गरूप. नवबुर्गा. च. मान.
स्वर्ग. लोक. किय् तस्य. छिय नमान.
इष्ट. देवी. छि. पनञो. प्रमाण-मन०

(रूपान्तरित)

भर्गरूपां शिवां दुर्गां विद्धि त्वं भयहारिणीम्
स्वर्गलोकगता देवा नमन्ति प्रत्यहं नवाम्
स्वेष्टदेवी समाम्नाता प्रमाणा मोक्षदायिनी-मन०

४९ शिवशक्त. अक्. त. नाम. रूप. भ्युन.
पान. वोज. मान्य क्या नुन. वनुन.
परमानन्द. पानस. वनुन.
मन. थिंर. कर. पूजन. प्रभो ॥

(रूपान्तरित।

शिवशक्तिमयं विश्वं नामरूपविभेदतः
नानाकारं समाभाति सुवर्णकटकादिवत्
स्वसंवेद्यमिदं सर्वं रहस्योद्घाटनाच्च किम्
नाथं तं परमानन्दं जगदानन्ददं परम्
स्वयमादाद्य यत्नेन परमानन्दभाग्भवेत्
मनः स्थैर्यं समादाय प्रभुं पूजय प्रत्यहम्

---

तृतीया पारिजातस्य मञ्जरी ज्ञानयोगगा
जगन्नाथ कृतासैषा परमानन्दप्राप्तये ॥५०॥

श्रीकृष्णाष्टमी दिने
फर्वरी १९६५
गुरुकुल पत्रिका
हरिद्वार में प्रकाशित

# तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु

१. परं परस्थं गहनमनाद्य
मेकं निविष्ठं बहुधा गुहासु
सर्वालयं सर्वचराचरस्थं
त्वामेव शम्भुं शरणं प्रपद्ये ।

२. देवाद्यदेवस्याशुतोषस्याष्टमूर्तेः श्रीसदाशिवस्य श्रवणं कीर्तनं मननं स्मरणं चिन्तनं पूजनं वन्दनं दास्यमात्मनिवेदनं च सर्वत्र सर्वदा मङ्गलप्रदं कामनाप्रदं कल्याणकारकमाशापूरकं शक्तिवर्धकं च भवति । विशेषतोऽस्मिन् रक्षाबन्धनमहापर्वणि भारतीयार्यजनता वेषभूषादिभिः स्वमात्मानं भूषयित्वा विशुद्धमनसा भावभरितचेतसा च भगवन्तमाशुतोषमष्टमूर्तिं सदाशिवं समाराध्य प्रातः काले प्रदोषकाले च समाराधयन्ति ।

३. स एष परात्परः परोज्योतिर्लिङ्गः परप्रकाशस्वरूपः परंब्रह्माभिधेयः निर्विकारो निर्लेपो निरञ्जनो निष्कलः सर्वव्यापको वृद्धिक्षयविवर्जितः पुराणपुरुषोऽजोऽव्ययोऽमरोऽजरोऽष्टाभिमूर्तिभिरष्टसु महाविभूतिषु सङ्घट्टित ओतः प्रोतश्च भवति ।

४. ताश्चाष्टमहाविभूतय इमाः श्रीमद्भगवद्गीतायामपराप्रकृतिनाम्नाभिहिताः ।

'भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च
अहंकार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा'

५. एतास्वष्टमहाविभूतिष्वधिष्ठातृत्वरूपेणस्थितो भगवानष्ट–

मूर्तिरष्टभिर्नामभिर्मूर्तिभिश्च श्रीपुष्पदन्ताचार्येणमहि – म्नापारस्तोत्रे इत्थमभिहितः।

त्वमर्कस्त्वं सोस त्वमसि पवन स्त्वं हुतवह
स्त्वभापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च०

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहा
तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम्०

६. उपरोक्तमाहाविभूतीनां स्तवः श्रीमताभिनवगुप्ताचार्येणापि स्वविरचितायां श्री पञ्चस्तव्यां सकलजननीस्तवस्यान्तिमे स्तवे विहित :–

महापाथोवह्निश्वसनवियदात्मेन्दुरविभिः०

तथा च-

भुवि पयसि कृशानौ मारुते खे शशांके
सवितरि यजमानेऽष्टधा शक्तरेका

७. एवमेव कविकुलगुरुणा श्री कालिदासेनाप्यभिहितं स्वविर-चितेऽभिज्ञानशाकुन्तलनाटकस्य मंगलाचरणे :–

या सृष्टिः स्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं
या हवि र्या च होत्री।
ये द्वे कालं विधत्तः श्रुतिविषयगुणा
या स्थिता व्याप्य विश्वम्।
यामाहुः सर्वभूतप्रकृतिरिति यया
प्राणिनः प्राणवन्तः।
प्रत्यक्षाभिः प्रपन्न स्तनुभिरवतु व
स्ताभिरष्टाभिरीशः।

८. यद्यपि मनोबुद्ध्यहंकाराणां प्रकृतिगतत्वान्नामभेदः प्रतीयते तथापि गुणसाम्यात् क्रमेण सोमसूर्ययजमानमूर्तिभिस्तेषाम-भिन्नताऽङ्गोक्रियत एव ।

९. पूर्वोक्तं श्रुतिरपि समर्थयति-

यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषधीषु
यो वनस्पतिषु यो रुद्रो विश्वा भुवना विवेश
तस्मै रुद्राय नमो अस्तु देवाः ॥

१०. अष्टमूर्तिः श्री सदाशिवोऽष्टसु महाविभूतिषु प्रत्यक्षरूपे-णाप्टभि र्नामभिः पृथक् २ अवस्थितो भवति ।

यथा—

१. श्री शिवस्य प्रत्यक्षमूर्तिः प्रथमा पृथ्वी यस्य अधिष्ठाता भवो देवः, या च सर्वप्राणिमात्रं मातृवत्पालयति पोषयति धारयति च । या च धारणाद् धरा इति नाम्नाभिधीयते ।

२. श्री शिवस्य द्वितीया प्रत्यक्षमूर्तिः जलं यस्या अधिष्ठाता शर्वो देवः या सर्वं प्राणिवर्गं रसास्वादं पूरयति यां विना जीवानां जीवनं न संभवति ।

३. श्री शिवस्य तृतीया प्रत्यक्षमूर्तिः अग्निः यस्या अधिष्ठाता रुद्रो देवो भवति ।

एषा प्रत्यक्षमूर्तिर्न केवलं मर्त्यलोक एव कल्याणकारिणी मंगलप्रदा भवति । अपितु द्युलोकेऽपि कल्याणप्रदा

मंगलप्रदा भवति । देवा अप्यनया मूर्त्या शरीरं धारयन्ति ।

४, तुर्या प्रत्यक्षमूर्तिः श्री शिवस्य वायुर्भवति । यस्या अधिष्ठाता पशुपतिरस्ति । यया जीवानामोजस्तेजोबलं सहश्च सम्यक् जायते ।

५. पञ्चमी प्रत्यक्षमूर्तिः श्री शिवस्याकाशं भवति । या अखण्डाकारेण शून्याकारा निःसीमा व्यापकरूपेण घटपटादिषु संस्थिता भवति यस्या अधिष्ठाता उग्रो देवः ।

६. षष्ठी प्रत्यक्षमूर्तिः श्री शिवस्य चन्द्रः यस्या अधिष्ठाता महादेवो भवति 'चन्द्रमा मनसो जातः' इति वेदवचना–च्चन्द्रमनसोर भिन्नत्वं भवति ।

ययौषधीनां रसो जीवनामाह्लादः प्रकाशश्च समुपजायते । या ह्रासवृद्धया कृष्णशुक्लपक्षविभागेन समयस्य परिवर्तनशीलत्वं बोधयति, अनयैव मूर्त्या देवा अपि सोमरसस्य पानं कुर्वन्ति ।

७. सप्तमी प्रत्यक्षमूर्तिः श्रीशिवस्य सूर्यदेवः यया मेघानां निर्माणमन्धकारनाशः ज्योतिदर्शनं प्रभावोत्पादकं तेजः शीतादिदुःखानां निवारणं च जायते ।

अज्ञानान्धकारयो र्निवर्तकत्वात् प्रकाशप्रदत्त्वात् बुद्धिसूर्ययोरभिन्नत्वं प्रकृतिसाम्यं प्रतीयते । अस्या अधिष्ठाता भीमो देवः ।

८. अष्टमी प्रत्यक्षमूर्तिः श्री शिवस्याहंकारः सा च यजमान-स्वरूपा। अहंकारसद्भावे यजमानः सर्वं कार्यं करोति। तदभावे जडमूकतुल्यः स भवति। अस्या अधिष्ठाता ईशानोदेवः। एतासां भूम्यादिजीवपर्यन्तानां प्रत्यक्षमहा-विभूतीनां एकः समष्टिगतः पूर्णाहंन्तात्मा श्री सदाशिवः परमात्मा परमेश्वरो निर्विकारो निरञ्जनो निश्चलो निर्लेपोऽचलः कूटस्थः सर्वत्र सर्वदा व्यापकोऽजोऽमरो नित्यो शुद्धो बुद्धो ज्ञानस्वरूपस्तिष्ठति। स एवास्मिन्-

पञ्चमहाभौतिकदेहे व्याप्य तिष्ठति। श्रुतिरपि तदेव—समर्थयति

११. द्वासुपर्णा सयुजा सखाया
समानं वृक्षं परिषस्वजाने,
तयोरन्या पिप्पलं स्वाद्वत्त्य-
न श्नन न्योअभिचाकशीति॥

नमस्ते पारिजातद्वेचिच्चकोरखगालय
चित्सुधाम्बुधिसंभूतकलानिधिशरोवह

अस्यार्थः-जीवात्मपरमात्मसंज्ञौ द्वौ पतत्रिणौ परस्परं सखिभावेन मिलित्वा वृक्षरूपेऽस्मिन्पञ्चमहाभौतिके पारिजातस्वरूपे देहे तिष्ठतः।

१२. तयोरेको जीवात्मसंज्ञः पतत्री सांसारिकभोगान् भुञ्जन्नपि क्षुत्पिपासार्दितः सदा तिष्ठति। द्वितीयः परमात्मसंज्ञः पतत्री भोगान् अभुञ्जन्नपि निर्विकारस्तिष्ठति। स एष जीवोऽज्ञाननिद्रामपहायावागमनदुःखनिर्मुक्तः कैव-

ल्यसुखमनुभवन् तद्रूपतामेति । अन्यथा नानात्वं पश्यन् संसारे जन्ममरणदुःखं पुनः पुनरनुभवति ।

१३. कठोपनिषदि द्वितीयाध्याये प्रथमवल्ल्यां तदेवाभिहितम् —

मनसैवेदमाप्तव्यं नेह नानास्ति किञ्चन,
मृत्योः स मृत्युं गच्छति य इह न नेव पश्यति ॥ श्रु. ११

अंगुष्ठमात्रः पुरुषो मध्य आत्मनि तिष्ठति.
ईशानो भूतभव्यस्य न ततो विजुगुप्सते ॥ श्रु: १२

एतद्वै तत्

अंगुष्ठमात्रः पुरुषो ज्योतिरिवाधूमकः
ईशानो भूतभव्यस्य स एवाद्य स उ श्वः ॥ श्रु. १३

एतद्वैतत्

१४. एतासामष्टमहाविभूतीनां प्रत्यक्षरूपं धृत्वा श्रीसदाशिवः सर्वस्मिञ्चराचरात्मनि जगति व्याप्तः ।

स एवाष्टमूर्तिधारणात्-अष्टमूर्तिःआशुतोषणात्-च-आशुतोष इत्यभिधीयते ।

१५. भक्तिभावविनम्रचेतसा पौरुषेण प्रयत्नेनाशुतोषस्याष्टमूर्तेः सदाशिवस्य यजनं पूजनं स्मरणं मननं श्रवणं ध्यानधारण-मुपासनं च सकलार्यजनाय कृते क्षेमंकरं कल्याणप्रदं मंगल्यं भवति । स एष देवश्चराचरात्माऽखण्डब्रह्माण्डे व्याप्तोऽस्माकं हृद्गुहायां तथा प्रच्छन्नो भूत्वा तिष्ठति यथा शिलायाँ चिन्तामणि प्रच्छन्नो भूत्वा तिष्ठति । तदेवाभिहितं महा-त्मना श्री परमानन्दवर्येण कश्मीरभाषायां अमरनाथगीति-

मञ्जर्यां (मन्स्थिर कर पूजन प्रभो) अतीव मनोहरपद्येन श्रीशिवं समर्चयता।

— कश्मीरी भाषा —

१६. कन्यिमंज लाल सुय मन्यि मंज
छय् निरुक छुयत्र छय् न्र रुन्य मंज
तप कर देह अरण्य मंज
मन स्थिर कर पूजन प्रभो।

अस्य संस्कृते पद्यानुवाद :—

मनः पाषाणगं देव स्वप्रकाशं मणिमिव
सन्तं नूपुरशब्दाभ मावयेच्चिद्वियत्स्थले
पावयेत्तपसात्मानं देहारण्ये मुनिरिव
मनःस्थैर्यं समाधाय प्रभुं पूजय प्रत्यहम्।

१७. श्री शिवस्य नामस्मरणचिन्तनादिभिरस्माकं मानसी अन्धता जडता मलिनता तथा निर्गच्छति स्वप्रकाशश्च जायते। यथा पारसमणिस्पर्शेन मलिनोऽयश्शुद्धः स्ववर्णमापद्यते। यथा वा रथ्यः पाथः गंगाप्रवाहे पतित शुद्धं पवित्रं जायते। तदेव श्रीभगवत्पादैः श्री शंकराचार्यवर्यैरभिहितम्।

यथा स्पर्शे लग्नः सपदि लभते हेमपदवीम्।
यथः रथ्यः पाथश्शुचि भवति गांगौघमिलितम्
तथा तत्तत्पापैरतिमलिनमन्तः मम हृदि
त्वयि प्रेम्नासक्तं कथमिव न जायेत विमलम्।

कविवरः सन्तकवीरदासश्चाह—

आदि नाम पारस अहै मन है मैला लोह
परसत ही कंन्चन भया छूटा बन्धन मोह
समः स्वर्शमणेर्देवो मलिनायः समं मनः
यत्स्पर्शाज्जायते जोवो मोहबन्धविवर्जितः ।

१८. अस्याशुतोषप्रसादेन मानवस्य मनसि स्थिरता सन्तोषः सत्यता प्रेम निर्भयता समुपजायते । अन्यथा मानवो जन्म-जन्मान्तरचक्रे पतित्वा 'मृत्योः स मृत्युं गच्छति" इति वचनान्न कुत्रापि शान्तिं लभते ।

तदेवाह वासुदेवमाता देवकी श्री कृष्ण जन्मनि—

१९. मर्त्यो मृत्युव्यालभीतःपलायंल्लोकान्सर्वान्निर्भयं नाध्यगच्छत्।
त्वत्पादाब्जं प्राप्य यदृच्छयाद्य स्वस्थः शेते मृत्युरस्मादपैति ।।

२०. अस्यैव देवस्य यजनात्पूजनाच्च सर्वासां देवतानां यजनं पूजनं सम्पन्नं भवति । स एव देवो देवानामपि आशापूरको भवति ।

२१. अनेनैव देवेन विश्वकल्याणाय समुद्रम्मथनात्समुद्भूतं काल-कूटाख्यं महाविषं स्वशक्तिप्रेरणया पीतमासीत् तदेवाभिहितं श्रीमद्भागवते -

ततः करतले कृत्य व्याप्य हालाहलं विषं
अभक्षयन्महादेवो भगवान्भूतभावनः ।

२२. स्वनिर्मितायां शारदाजयाशापञ्चस्तव्यामपि श्यामाख्ये प्रथमे स्तवे चोक्तं मया।

तद्वै विषं पशुपतिः स्वकरे गृहीत्वा
ध्यात्वा च तां भयहरीं स्वकलां शरण्याम्
पीत्वा चकार पशुपाशहरोऽभयान्तान्
शक्त्या मुमोच विषकालभयं तदानीम् ॥

२३. स एव देवाद्यवेदः सर्वाभिर्देवताभिः सहास्माकं हृदयगुहायां निवसति । तथा चोक्तं गीतायां श्री कृष्णेनार्जुनं प्रति स्वश्रीमुखेन—

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत
तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्
अस्यदेवस्य समाराधनेन सर्वासां देवतानां समाराधनं सम्पन्नं भवति तद्यथा—

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सदाशिवः
त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहंभावेन पूजयेत् ।

२४. चतुर्वेदसारभूतः श्री महागायत्रीमन्त्रश्च तमेव देवमाशुतोषं श्री सदाशिवं स्तौति—

ओं भूर्भुवः स्वस्तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य
धीमहि धियो यो नः प्रचोदयादोम् ।

२५. स एव देव श्शक्तिरूपेण जीवानां शक्तिं प्रचोदयन्ति । तदेवाभिहितं स्वनिर्मितायां श्री शारदा जयाशापञ्चस्तव्यां पञ्चमे नव दुर्गास्तवे प्रथमे द्वितीये च पद्ये मया—

"या चित्कला भगवती प्रथमं सुसूक्ष्मा
विद्योतते सुकृतिनां हृदये पराख्या
भर्गाख्यया सवितृमण्डलमध्यसंस्था
सा बुद्धिचोदनपरा भवताद्वरेण्या ॥"

२६. ध्यायन्ति यां सहृदया हृदये प्रभाते
गायन्ति यां सुकवयो ललितैर्वचोभिः
यां योगिनः स्वहृदये परिशीलयन्ति
तां मोक्षदां भगवतीं शरणं प्रपद्ये ॥

अतस्तत्प्रीणनात्सर्वे देवाः प्रीणन्ति—

उक्तं च—

"प्रीणनात्तस्य देवस्य प्रीयन्ते सर्वदेवताः"

स तु स्वकर्मणा प्रेतो भवति—

स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः
स्वकर्मनिरतः सिद्धिं यथा विन्दति तच्छृणु ।

२७. स एक एव सन् बहुधाकरोति स्वात्मानम् तथा चोक्तम् ।

एको देवः सर्वभूतेषु गूढः
सर्वव्यापी सर्वभूताधिवासः ।
कर्माध्यक्षः सर्वभूतान्तरात्मा
साक्षी चेत: केवलो निर्गुणश्च ।

२८. अस्य देवस्य समाराधनेन सर्वे ब्रह्मर्षयः देवर्षयो मुनयो ज्ञानिनो देवाः सिद्धाः साधवः सन्तः परां सिद्धिमितो गतः। शिवसंकल्पचयनादेव श्री दयानन्दसरस्वती वर्यः सुमहत्पदं समधिगतम्।

संसारतापतप्तं मां स एवाशुतोषो भगवान् श्री शिवः प्रसीदतु।

सन्ध्यासमागममहो मम जीवितस्य
ज्ञात्वा च मां जिगमिषां तव सन्निधाने।
प्रक्षाल्य धूलिमलिनं तनयं स्वकीयं
क्रोडे नयाशु जगदीश कृपानिधान।

शुभं भवतु लेखकपाठकयोः।

श्रीशिवार्पणमस्तु

★★

# शिव की परापूजा

## दशम-अनुवाक

।। तन्मे मनः शिव ......सकल्पमम्तु ।

परम पावन शिवरात्रि के महापर्व पर भूतनाथ देवा-धदेव महादेव आशुतोष शङ्कर जी का पूजन, श्रवन, मनन, स्मरण और चिन्तन करना सर्व प्रकार से मङ्गलप्रद, कामनाप्रद, आशाप्रद तथा कल्याणप्रद माना गया है।

इस महापर्व पर 'आर्य' जनता वेशभूषा से सज धज कर शुद्ध मन मे भावबिभोर हो कर भगवान् आशुतोष की आराधना प्रातः काल से लेकर प्रदोष काल तक करते आये हैं।

भगवान् शंकर परात्पर परब्रह्म अक्षर परज्योति निर्विकार सर्वव्यापी अष्ठमूर्तियों से आठ महा विभूतियों मैं संगठित होकर ताना बाना के समान ओतप्रोत हैं।

इन की आठ विभूतियां और आठ मूर्तियां यह हैं।

आठ विभूतियां : (१) पृथ्वी, (२) जल, (३) तेज, (४) वायु, (५) आकाश (३) सूर्य, (७) चन्द्र, तथा (८) जीवात्मा।

आठ मूर्तियों के नाम यह हैं।

(१) शर्व, (२) भव, (३) रुद्र, (४) उग्र, (५) भीम (६) पशुपति, (७) महादेव और (८) ईशान।

श्री गीता जी मैं भी इन आठ विभूतियों का उल्लेख आया है लेकिन वहाँ अपरा प्रकृति के रूपान्तर में हुआ है।

"भूमिरापोऽनलोवायुः खंमनो बुद्धिरेवच।
अहंकार इतीयंमे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा।"

श्री पञ्चस्तवी में भी "सकलजननी स्तव" के अन्तिम पद्य में इस का उल्लेख हुआ है।

भुविपयसि कृशानौं-मारुवे, खेशशाङ्के।
सवितरि यजमाने प्यष्टधा शक्तिरेका ०

कविकुल गुरु कालिदास ने भी 'आभिज्ञान शाकुन्तलम्' नाटक के मङ्गलाचरण में अष्टमूर्ति भगवान् शङ्कर को इन्हीं रूपों में प्रणाम किया है भगवान् शङ्कर की अष्टमूर्तियों में प्रथम प्रत्यक्षमूर्ति "पृथ्वी" है। जो कि सारे विश्व की आधारशिला है। जिस को 'धरा' के नाम से विभूषित किया है। जो सारे संसार को मां की तरह पालन पोषण करती है।

भगवान् शंकर की दूसरी प्रत्यक्षमूर्ति 'जल' है। जिसके बिना समूचे संसार का जीवन असंभव है।

भगवान् शङ्कर की तीसरी प्रत्यक्षमूर्ति 'अग्नि' है। यह मूर्ति केवल मर्त्यलोक के लिए ही कल्याण कारी नहीं है। अपितु देवताओं का भी इस मूर्ति के बिना रहना असंभव प्रतीत होता है। भगवान् शङ्कर की चौथी प्रत्यक्ष मूर्ति 'वायु' है। जिसके द्वारा प्राणियों के ओज, सह और बल मिलता है।

भगवान् शङ्कर की पांचवीं प्रत्यक्ष मूर्ति 'आशाक' है। जो कि शून्य, निःसीम, और व्यापक है। जिसके द्वारा शब्दों का आदान-प्रदान का बोध मिलता है।

भगवान् शङ्कर की छटी प्रत्यक्ष मूर्ति 'चन्द्रमा' है। जिस के द्वारा वनस्पतियों औषधियों को रस मिलता है। जो कि विश्व का कल्याण करती है।

भगवान् शङ्कर की सातवीं प्रत्यक्ष मूर्ति भगवान् सूर्य देव' है। जिस के द्वारा हमें प्रकाश मिलता है तथा बादलों का निर्माण होता है। जिससे समस्त संसार को अन्नपानरूप कल्याण मिलता है।

भगवान् शंकर की आठवीं प्रत्यक्ष मूर्ति 'जीवात्मा' है। जिस का अपर नाम 'यजमान' है। जिस के विना सारा विश्व खोखला सा प्रतीत होता है।

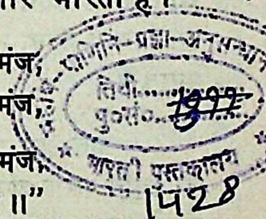
इन अष्ट मूर्तियों का प्रत्यक्ष रूप धारण करके भगवान् शंकर सारे विश्व में व्यापक हैं। भगवान् शंकर 'आशुतोष' है। भक्तिभाव से विनम्र होकर इस की पूजा यजन, स्मरण. मनन, उपासना और श्रवण करना सकल आर्य परिवार के लिए कल्याण कारी है। यही आशुतोष चराचर अखण्ड ब्रह्मांड में व्याप्त है। यही हमारी हृदय गुफा में इस तरह छिप कर बैठा हुआ है, जिस प्रकार पत्थर में चिन्तामणि रत्न छिप कर बैठा हुआ है। इसके नाम स्मरण और चिन्तन करने से हमारा मन ऐसा निर्मल बन जाता है जैसा कि पारसमणि के छूने से मैला लोहा खरा सोना वन जाता है।

कबीर जी कहते हैं :—

'आदिनाम पारस अ है मन है मैला लोह।
परसत ही कन्चन भया छूटा बन्धन मोह।"

श्री परमानन्द जी ने काश्मीरी भाषा की 'अमरनाथ' गीत्रि का में क्या ही सुन्दर पद्य में आशुतोष की स्तुति की है। जिस के सुनने से मन आनन्द के समुन्द्र में हिल्लोरे मारता है।

"कत्रि मंज लाल सुय मत्रि मंज,
छुयनिरुक छुत्र २ रुत्रि मंज,
तप कर देह अरण्य मंज,
मन थिर कर पूजन प्रभो॥"



इस आशुतोष के पूजन मनन और स्मरण से मन में स्थिर, संतोष, सत्य, प्रेम और अभय मिल सकता है। अन्यथा मानव जन्मजन्मान्तरों में आवागमन के चक्कर में पड कर भटकता फिरता है। कहीं भी सुख शान्ति नहीं पाता है। इसी के पूजने से सब देवी देवताओं का पूजन हो सकता है। यहीं सबों की आशाओं को पूर्ण करता हैं। इसी आशुतोष नें विश्व कल्याण के लिए कालकूट विष पिया है।

"ततः करतले कृत्य व्याप्य हालाहलं विषं।
अभक्षयन्महादेवो भगवान् भूतभावनः"

यही आशुतोष सब देवी देवताओं समेत इस हमारे पञ्चमहाभौतिक शरीर में निबास करता है। इस की आराधना से सब देवताओं का पूजन संपन्न हो जाता है, जैसा कि कहा है।

"देहो देवालयो देवि जीवो देवः सदाशिवः।
त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोहंभावेन भावयेत्॥"

इसी शिवरात्रि के दिन ऋषिप्रवर श्री दयानन्द जी को ज्ञान प्राप्ति हुई है। अतः वे शिवरात्रि को बोधरात्रि कहते हैं। आर्य समाजी इस महापर्व को "ऋषिबोधपर्व" के रूप से मनाते हैं इस दिन वे हवन, भाषण, सत्संग, इत्यादि रूपों से इस त्योहार को मनाते हैं।

अतः हम आर्यजाति एकत्रित हो कर भगवान् आशुतोष को स्तुति करके अपनी शुभ कामनाऐं पूरी करेंगे, जिस से हमारे समूचे भारत वर्ष का कल्याण मिल जायेगा।

। इति ।

| अशुद्ध | शुद्ध | पृष्ट | पंक्ति |
|---|---|---|---|
| परिजातः | पारिजातः | १ | १ |
| पारिजाताय | पारिजात ! हे | [illegible] | ६ |
| सदगति | सद्गतिं | [illegible] | ३ |
| जो कि | जी की | [illegible] | [illegible] |
| जो की | जो कि | [illegible] | [illegible] |
| तङ्गिणी | तरङ्गिणी | ७ | ५ |
| सुषामा | सुषमा | ७ | १८ |
| पंपुग्रामे | पंपुरग्रामे | ८ | १३ |
| विजयेर | विजयेश्वर | ८ | १४ |
| राजित | राजिते | ८ | १७ |
| रैकशतद्वा | रैकशताधिकद्वा | ९ | १३ |
| कृनार्थं | कृतार्थं | ९ | १८ |
| निवेशी | निवेशो | १० | ६ |
| एवं | एष | १० | १७ |
| सरस्तारय | सरसस्तारय | १० | २४ |
| सर्व विश्व | सर्वं विश्वं | ११ | २१ |
| स्मरत्नी | स्मरन्तो | १२ | २ |
| मम्मटी | मम्मटो | १२ | १८ |
| सप्तदशाधिकैक— | एक नवत्यधिक— | | |
| नवतितमे | सप्तदश शततमे | १३ | १६ |
| कृ्ण | कृष्ण | १५ | ४ |
| अजतिस्य | अर्जयति स्म | १४ | २२ |
| अभिहितान् | अभिहितवान् | १५ | १ |
| कवयिथा | कवयित्र्या | १५ | ५ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| श्रीमती | श्रीमतो | १५ | ८ |
| देहं मष्टादशा शता | देहमशीत्यधिका | | |
| धिकाशीर्तिमे | ष्टादशशततमे (१८८०) | १५ | १३ |
| चात्रि | चान्त्रि | १६ | १३ |
| वितापै | त्रितापै | १७ | १४ |
| पाशा | पाश | २० | १४ |
| पातजनीर | पातजंनीरं | २३ | ५ |
| तन्वङ्गा | तन्वङ्गी | २९ | ७ |
| स्वयभादाद्य | स्वयमासाद्य | ४६ | १० |
| इताय मेमिन्ना | इतीयं मे भिन्ना | ४७ | २१ |
| माहा | महा | ४७ | ७ |
| यहापाथा | महीपाथो | ४८ | १० |
| शाक्त | शक्ति | ४९ | १३ |
| रुदो | रुद्रो | ४९ | ५ |
| भवनि | भवति | ४९ | २१ |
| जवनामाह् | जीवानामह् | ५० | १३ |
| श्रया | श्रयः | ५३ | १८ |
| यथः | यथा | ५३ | १९ |
| स्थिर | स्थिरता | ६१ | ९ |
| प्राक्कथने | | | |
| वाङ् | वाङ्ग | ८ | ८ |
| कुवद्भिम | कुर्वद्भिर्मं | ८ | १६ |
| प्राथयामः | प्रार्थयामः | ८ | १८ |

कृपया पाठकगण उपरोक्त अशुद्धियां शुद्ध करके पुस्तक को पढ़िए।


महर्षि–पाणिनि–प्रज्ञा–अनुसन्धान केन्द्र
तिथी
पु०सं०
भारती पुस्तकालय
1428

